

श्रीपुष्पदन्तप्रणीतम् ।

॥ श्रीशिवमहिम्नःस्तोत्रम् ॥



[illegible]विद्वरिष्ठ ब्रह्मलीन १०८ श्रीमत्स्वामि प्रकाशानन्दपुरी-
प्रणीतशिवनीराजनसमेतम् ।

ध्यान-पुष्पांजलि-शिवनामावलीसमन्वितम् ।



१०८ श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामि
प्रेमपुरी महाराज द्वारा संग्रहीत
हिन्दी-अनुवाद सहितम् ।

अमूल्यवितरणार्थं प्रकाशिका
अ. सौ. लीलावती हीरालाल नाणावटी



श्रीपुष्पदन्तप्रणीतम् ।

॥ श्रीशिवमहिम्नःस्तोत्रम् ॥



ब्रह्मविद्वरिष्ठ ब्रह्मलीन १०८ श्रीमत्स्वामि प्रकाशानन्दपुरी-
प्रणीतशिवनीराजनसमेतम् ।

ध्यान-पुष्पाञ्जलि-शिवनामावलीसमन्वितम् ।



१०८ श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामि
प्रेमपुरी महाराज द्वारा संग्रहीत
हिन्दी-अनुवाद सहितम् ।



अमूल्यवितरणार्थं प्रकाशिका
अ. सौ. लीलावती हीरालाल नाणावटी

: प्रकाशक :
अ. सौ. लीलावती
हीरालाल नानावटी
रतन हाउस, व्ही. पी. रोड,
मुंबई ४.





: मुद्रक :
के. एल्. एन्. राव
मुंबई वैभव प्रेस, मुंबई नं. ४

॥ प्रस्ताव ॥

देवदरबारमें गाने-बजानेका काम करनेवालोंको गन्धर्व कहते हैं। वे देवताओंसे भी विशेष विलासप्रिय होते हैं। उनका एक 'पुष्पदन्त' नामक राजा था। वे गंधर्वराज शशिशेखर देवदेव महादेवके प्रेमी भक्त थे। अपनी स्वाभाविक विलासिता एवं शिवभक्तीके कारण उन्हे पुष्पोंका शोख ही नहीं, आवश्यकता भी अधिक थी। एक समय फूलोंकी खोजमें वे पृथिवी पर उतर आये और एक पृथिवीपति (यहाँ के राजा) के बगीचेसे चुपकेसे फूल लेकर वापस लौट गये। बाद तो उनका दैनिक कार्यक्रम बन गया कि गुप-चुप आना और फूल चुराकर चुप-चाप चले जाना। पृथिवीपतिने निष्णातगुप्तचरोंको तैनात किया, अच्छे-अच्छे इनाम देनेकी घोषणा की, परन्तु सब व्यर्थ, क्योंकि परोक्षप्रिय देवताओंको अदृश्य रहनेकी कला हस्तगत होती है। गन्धर्वराज भी उस अदृश्य विद्याका प्रयोग करते थे। और उसी के बल पर अभी तक बच रहे थे। पृथिवीपतिने तंग आकर विद्वानोंकी संमति चाही। पूर्ण विचार-विमर्शके अनन्तर विद्वानोंकी राय हुई कि "शिवलिङ्गपर चढे हुए बिल्वपत्रादि पुष्पिले पौदोंके आसपास बिखेर दिये जाय, ताकि उस पै पैर पड़नेपर चोरकी अदृश्य रह सकनेवाली शक्ति नष्ट हो जायगी और वह पकडा जा सकेगा।" पृथिवीपतिने वैसा ही कराया। पश्चात् पुष्पदन्तजी आये और पुष्पचयनकी धूनमें इतने उतावले एवं असावधान थे कि नीचे पडे शिवनिर्माल्यका पता तक उन्हें न चल सका। उस पै पैर पडते ही उनकी विद्याका प्रभाव जाता रहा। पकडे जानेके भयसे घभरानेके बजाय उन्होंने ध्यान किया तो मालूम हुआ कि भगवान शंकरके अपराधसे ऐसी दशा हुई है और शंकरकी प्रसन्नताही बचनेका एक मात्र उपाय है। आशुतोष शंभुको संतुष्ट करनेके लिये उसी समय 'शिवमहिम्नःस्तोत्र' की रचना की। स्तोत्र-

गानसे भोलेबाबा खुश हो गये और उन्हें उनकी विद्या प्रदान करके बचा लिया। इस प्रकारके वृत्तान्तका सूक्ष्म उल्लेख इस स्तोत्रके ३८, वे श्लोकमें हुआ है।

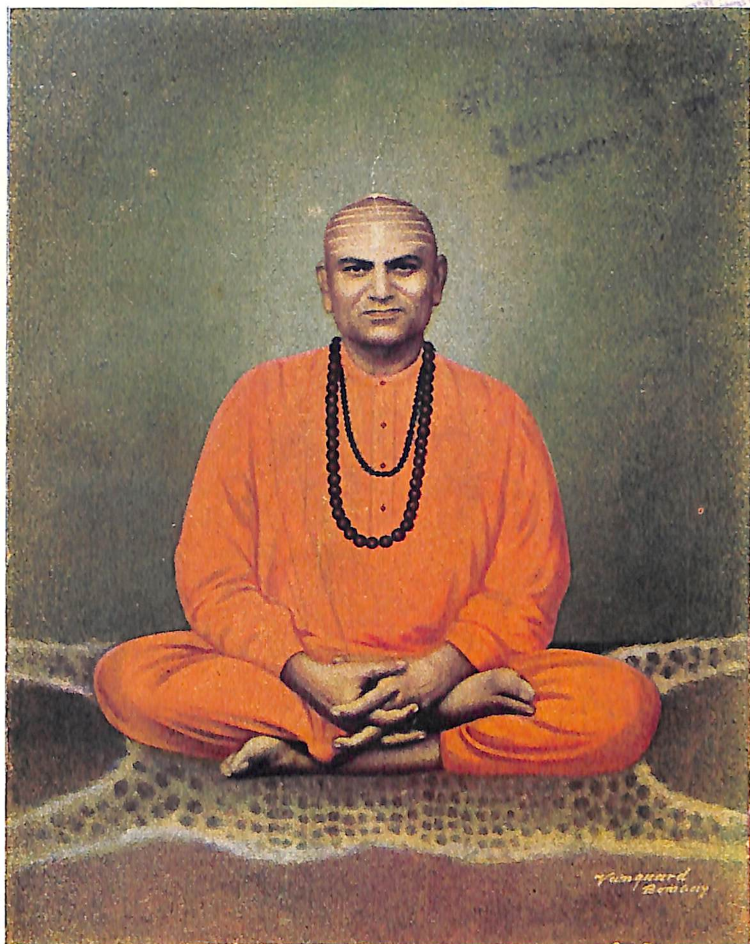
तबसे यह स्तोत्र अनेक भक्तोंको मुशिबतोंसे उबारता आया है और पाठमात्रसे भी अपने प्रभावका उद्घोष करता आ रहा है। इसके एकादश पाठसे रुद्राभिषेक करनेका रिवाज भी है। मानो, यह पौराणिक रुद्री है। न चाहने पर भी 'मान, न मान, मैं तेरा महमान' बन कर छाती पर चढनेवाले दुःखको दूर करनेका अमोघ उपाय है। भगवान शंकरकी प्रसन्नता। इस स्तोत्रके पाठ करनेसे दयालु शंकर जिस प्रकार पुष्पदन्तजीके उपर प्रसन्न हो गये थे वैसे सब पर भी हो जाते हैं। अतः सबको इस स्तोत्रका पाठ करना-कराना चाहिये, इसका प्रचार खूब करना चाहिये। इसको छपवा कर शिवभक्तोंमें बाँटने से बहुत पुण्य लाभ होता है।

विक्रमसंवत २०१० की महाशिवरात्रिको थाणेश्वर महादेवके दर्शनकरनेके लिये 'वेदान्तसत्संगमंडल' का संघ गया था। संघमें संमिलित भाई-बहनोंने वहाँ इस स्तोत्र का पाठ किया था। लौटते समय मार्गमें ही मंडलके प्रमुख कार्यकर्ता श्रीयुत् प्रियभाई प्रवीणचन्द्र हीरालाल नाणावटी ने इच्छा प्रदर्शित की कि इस स्तोत्रका हिन्दी अनुवाद हो जाय तो अधिक उपयोगी हो। उनकी शुभेच्छासे अनुवाद हो गया और वे (प्रवीणभाई) ही अपनी माताजीके नामसे छपवा कर शिवभक्तोकी सेवामें सादर समर्पित करते हैं। अपने मानवसुलभ प्रमादादि के कारण अनुवाद का कई अंशोमें अपूर्ण तथा दूषित होना अनिवार्य है। तथापि इस व्हाने थोडा समय शिवचर्चामें बीता, यही संतोषका विषय है।

सर्वोऽपि सुखमाप्नोतु सर्वोह्यज्ञानमन्ततु।
सर्वस्तरतु संसारं सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥

प्रस्तावक—प्रेमपुरी।





१०८ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य
स्वामी प्रेमपुरीजी महाराज.

अथ श्रीशिवनीराजनस्तोत्रम्

ॐ जय गङ्गाधर हर शिव जय गिरिजाधीश
शिव जय गौरीनाथ त्वं मां पालय नित्यं
त्वं मां पालय शम्भो कृपया जगदीश ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

ॐ = ओङ्काररूप सच्चिदानंदघन परमात्मन् ! **गङ्गाधर**=जटाजूटमें भागीरथी गंगाको और हृदयारविंदमें ज्ञान–गंगाको धारण करनेवाले ! (पृथ्वीका सबसे उच्च प्रदेश है हिमालय और हिमशिखररूपी शिरोभागसे ही त्रिभुवन–पावनी दोनों गंगायें प्रवाहित होती हैं । संसारके हित और सगर-पुत्रोंके उद्धारके लिये महापुरुषार्थी भगीरथ के द्वारा लाई हुई स्वर्गङ्गाके प्रपातको पातालमें न पैठने देकर जटाझूटमें उल्झा रखके शनैः शनैः प्रवाहित करते रहते हैं–यह आशय है) **हर** = (अशेष अज्ञानको) हर लेनेवाले ! **शिव** = हे मंगलमय शिवजी ! (थके हुए बच्चोंको जैसे मातापिता अपनी गोदमें सुलाके आराम पहुँचाते हैं, कर्मफल भोगते–भोगते थके हुए जीवोंको भी प्रलयके समय उसी प्रकार अपने स्वरूपमें सुला (समा) लेनेवालेका नाम शिव है), **जय** =(आपका) जय हो; **गिरिजाधीश** = पहाडी लडकीके उपर कृपा करके; **गौरीनाथ** = उस पार्वतीके पतित्वका स्वीकार करलेनेवाले ! **शिव** =हे शिवजी ! **जय, जय** = आपका सदाय जय हो, जय हो । **शम्भो** = हे सबके सुखदाता ! **त्वम्** = तू (आप); **माम्** = मेरा; **नित्यम्** = सदा (कामक्रोधादि से); **पालय** = पालन करें । **जगदीश** = हे जगदीश्वर ! **त्वम्** = आप, **कृपया** = कृपा करके; **नित्यम्** = अवश्यमेव; **माम्** = मेरी (जन्ममृत्युसे) **पालय** = रक्षा करें । **ॐ** = हे प्रणवरूप परमेश्वर ! **हर, हर, हर** = हे त्रितापको हर लेनेवाले; **महादेव** = महादेवजी ! (मेरी विनति व्यर्थ न जाने पावे) ।

प्रथमके तीन पद्योंका अन्वय एक साथ है—

पारिजातहरिचन्दनकल्पद्रुमनिचयैः, शिव कल्प०
कुसुमितलतावितानै २, गुञ्जद्भ्रमरमयैः ।
उन्मदकोकिलकूजितशिखिकेकारुचिरैः, हर शिखि०
सहकारैश्च कदम्बै २, भृङ्गवधूमुखरैः ॥ १ ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

मुदितहंसयगखेलत्सारसपरिवारैः, शिव सार०
भ्रमरयुवतिमुखराम्बुज २, सुभगैः कासारैः
हारिणि कलधौताद्रेर्देशे मणिरचिते, हर देशे०
भवने सुखमासीनं २, चिन्तामणिनिचिते ॥ २ ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

पीठे गिरिजासहितं चन्द्रकलाधवलं, शिवमिन्दुक०
विशरणशरणं देवं २, विपत्क्षयप्रबलम् ।
सम्पद्विधानरसिकं जगदङ्कुरकन्दं, हर जग०
प्रणमामो वयमीशं २, चित्परमानन्दम् ॥ ३ ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

जिन कारणोंसे शिवजीका भवन सुशोभित है, प्रारंभमें उनका वर्णन किया जाता है—

पारिजातहरिचन्दनकल्पद्रुमनिचयैः = पारिजातके वृक्ष, चंदनवृक्ष एवं कल्प वृक्षोंकी सघन घटाओंके कारण; **गुञ्जद्भ्रमरमयैः** = गुंजार कर रहे हैं असंख्य भ्रमर जिनमें वैसे; **कुसुमितलतावितानैः** = पुष्पभारसे लथपथ

लदी हुई लताओंके मंडपोंके कारण; **उन्मदकोकिलकूजितशिखिकेकारुचिरैः**=मस्त बना देनेवाले कोकिलाओंके कूजन और मयूरोके टहुकारोंसे रम्य; **सहकारैः** = आम्रवृक्षोंके कारण, **च** = तथा, **भृङ्गवधूमुखरैः** = भ्रमरियोंके शब्दोंसे मानो शब्द करते हुए-से, **कदम्बैः** = कदंब वृक्षोंके कारण, **मुदितहंसयुगखेलत्सारसपरिवारैः** = खुश खुशाल हंस एवं हंसनियोंके सहित क्रीडा कर रहे हैं सारस पक्षियोंके परिवार जिनमें (तथा); **भ्रमरयुवतिमुखराम्बुजसुभगैः** = मधुलौल्यसे कमलकोशों पर मडराती हुई भ्रमरियोंके गुंजारसे मानो गुंजारव कर रहे हैं कमल जिनमें, अतएव अतीव सुंदर; **कासारैः** = तालाबोंके कारण; **हारिणि** = (मनको बरबस) हर लेनेवाले-अर्थात् उपर्युक्त सर्व कारणोंके द्वारा सर्व प्रकारसे सुशोभित; **कलधौताद्रेः** = कैलास पर्वतके; **देशे** = दिव्य स्थल पर; **मणिरचिते** = मणियोसे चिने गये; **भवने** = भवनमें; **चिन्तामणिनिचिते** = चिंतामणियोंसे बनाये गये; **पीठे** = पीठ (सिंहासन) पर; **गिरिजासहितम्** = पार्वतीजीके सहित; **सुखम्** = सुखपूर्वक; **आसीनम्** = बैठे (विराजमान) हुए; **ईशम्** = सबके स्वामी महादेवजीको; (तमोगुणके अभिमानी भगवान रुद्र है और माया सत्त्व-प्रधान होती हुयी भी तमो-मयी ही है, अतः माया-विशिष्ट चेतन ईश या ईश्वर है उसको); **वयम्** = हम (सब लोग मनसा, वाचा, कर्मणा); **प्रणमामः** = प्रणाम करते हैं। कैसे है वे ईश? कुछ विशेषणोंसे उनका वर्णन करते हैं—**चन्द्रकलाधवलम्** = चंद्रकला (चांदनी) के सदृश धवल; यानि श्वेत (श्वेत वर्ण नैसर्गिक है कृत्रिम नहीं। शिवजी श्वेत है इसका आशय यह हुआ कि कृत्रिम वर्ण (रूप) से रहित या नीरूप है। श्वेतवस्त्र के उपर लालपीले आदि दूसरे वर्ण रंगने पर आते हैं और धोने पर उतर जाते हैं। श्वेत न आता है, न जाता है। वह पहले भी था, पीछे भी रहता है; अतः स्वाभाविक ठहरा। वही शिवका स्वरूप हो सकता है। किसी भी रंगके पदार्थको जलाइये, अन्तमें प्रकाशमान श्वेतभस्म ही शेष रह जाता है। यह मौलिक तत्त्व है, इसे अग्नि नहीं उडा सकता। यही अपरिवर्तनीय शिवस्वरूप है), **विशरणशरणम्** = अशरणोंके शरण; **देवम्** = दैवी संपत्तिसे संपन्न, **विपत्क्षयप्रबलम्** = विपत्तियोंके संहार करनेमें प्रबल; **सम्पद्विधानरसिकम्** = संपत्तियोंके दान देते रहने में रसबस; **जगदङ्कुरकन्दम्** =

जगतकी उत्पत्तिका कारण होते हुए भी; चित्परमानन्दम्=सच्चिदानंदस्वरूप-में स्थित ॥ १, २, ३ ॥ बीच—बीचमें चित्तकी पवित्रता और एकाग्रताके लिये "ॐ हर हर हर महादेव" इस प्रकार शिवस्मरण किया गया है।

अब श्लोकांक ४ से ७ तक चार पद्योंका एक साथ अन्वय है—

यस्याग्रेऽमरवध्वो विबुधाधिपसहिताः, शिव विबु०
मुदितमनोहरवेषा २, लास्यकलामहिताः।
ताथै ताथै तथेति विविधं नृत्यन्ति, हर विविधं०
किङ्किणिनूपुरशिञ्जित २, रुचिरं वलगन्ति ॥ ४ ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

ताधिक धिनकित्थथेति विविधं वादयते, शिव विविधं०
मृदङ्गममरी काचित् २, रुचिरं नादयते।
वीणां काचिद्रमणी गानविदाभरणा, हर गान०
गायति कलमपराचित् २, चिन्तितहरचरणा ॥ ५ ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

रमया सहितो विष्णुर्ब्रह्मा सावित्र्या, शिव ब्रह्मा०
जिष्णुर्नृत्यति भक्त्या २, मुदितमनाः शच्या।
तुम्बुरुरुचितं मुरजं विविधं वादयते, हर विविधं०
नारदमुनिरपि वीणां २, महतीं नादयते ॥ ६ ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

तं प्रसन्नवदनं प्रभुमिन्दुकलाभरणं, शिवमिन्दु०
प्रणमामः करुणाब्धिं २, तापत्रयहरणम्।

देवासुरमणिमुकुटैर्नीराजितचरणं, हर नीरा०
भक्ताभीष्टदकल्पं २, कातरजनशरणम् ॥ ७ ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

यस्य = जिस (जो शिवजी कैलास पर्वतके दिव्य देशमें मणिरचित भवनके अंदर चिंतामणिनिर्मित पीठ पर पार्वतीजीके सहित विराजमान हैं उन) के; **अग्रे** = आगे (उनको खुश करनेके लिये); **लास्यकलामहिताः**= नृत्यकलामें निष्णात; **मुदितमनोहरवेषा** = नाचके प्रसंगसे प्रसन्नतापूर्वक नाचमें उपयुक्त मनोहर वेष-भूषा रच कर; **अमरवध्वः** = देवियां; **विबुधाधिपसहिताः** = देव एवं देवाधिपोके सहित; **ताथै-ताथै-तथा, इति** = इस प्रकार ताल लेती हुई; **विविधम्** = विभिन्न प्रकारसे; **नृत्यन्ति** = नाचती हैं (और); **किङ्किणिनूपुरशिञ्जितरुचिरम्** = कमरमें पहनी हुई करधनी एवं पैरोंमें पहने हुए नूपुरोंमें लगी हुई घुंघरूकी मधुर ध्वनिसे रुचिकर; **वल्गन्ति** = आवाजको करती हैं ॥ ४ ॥ **काचित्** = कोई एक (अनौखी) **अमरी** = देवी; **तांधिक-धिनकित्-थथा, इति** = इस प्रकार ठेका लेती हुई; **मृदङ्गम्** = मृदंगको; **विविधम्** = विलक्षण ढंगसे; **वादयते** = बजाती है । **गानविद्याभरणा** = संगीतज्ञोंमें शिरोमणि; **काचिद्** = कोई दूसरी; **रमणी** = देवी; **वीणाम्** = वीणाको; **रुचिरम्** = सुचारुरूपसे; **नादयते** = बजाती है । **अपराचित्**=ओर तीसरी (देवी) तो; **चिन्तितहरचरणा** = शिवचरणोंका चिंतन करती हुई; **कलम्** = खूब मीठे स्वरसे आलाप लेकर; **गायति** = गा रही है ॥ ५ ॥ **रमया** = लक्ष्मीजीके; **सहितः** = सहित; **विष्णुः** = विष्णु भगवान; **सावित्र्या** = सावित्रीजीके सहित; **ब्रह्मा** = ब्रह्माजी; **शच्या** = इन्द्राणीजीके सहित; **जिष्णुः** = इन्द्र (ये सबके-सब); **मुदितमनाः** = मनमें खूब खुश होकर; **भक्त्या** = पूर्ण प्रेमसे या श्रद्धासे; **नृत्यति**=नाचते हैं। **तुम्बुरुः**=इस नामके एक प्राचीन संगीताचार्य; **मुरजम्**= पखवाजनामक वाद्यको; **उचितम्**=उत्तम रीतिसे (और); **विविधम्** = अनेक तर्जसे; **वादयते** = बजाते हैं (तथा); **नारदमुनिः** = नारदबाबा; **अपि** = भी; **महतीम्** = 'महती' नामकी अपनी; **वीणाम्** = वीणाको; **नादयते** = बजा रहे हैं ॥६॥ **तम्**=उसको (जिनके आगे ये गायन, वादन और नर्तन हो

रहे हैं उन सदाशिवको हम); **प्रणमामः** = (साष्टांग दंडवत्) प्रणाम करते हैं। जिन्हें प्रणाम किया जा रहा है उनके कुछ महत्वशाली विशेषण बतलाये जाते हैं— **प्रसन्नवदनम्** = (सर्वकालमें, सर्व देशमें, सर्व दशामें) प्रसन्नमुख; **प्रभुम्** = पूर्ण प्रभावशाली; **इन्दुकलाभरणम्** = चंद्रकलाको शिरोभूषण-रूपसे धारण करनेवाले; (सबके मनकी अधिष्ठातृदेवता चन्द्रमा महादेवजीके मस्तकपर है। उसके द्वारा वे सर्वके मनोमन्दिरमें अमृतमय प्रकाश एवं शान्तिसुधाका संचार करते हैं—यही शिवका शिवत्व है). **करुणाब्धिम्** = करुणासागर; **तापत्रयहरणम्** = तीनों तापोंको हर लेनेवाले; **देवासुरमणि-मुकुटैः, नीराजितचरणम्** = देवदानवोंके मणिमय मुकुटों में लगे हुये रत्नोंकी ज्योतियोंसे नमस्कार करते समय मानो शिवजीके चरणोंकी आरती उतारी जाती है; **भक्ताभिष्टदकल्पम्** = भक्तोंके मनो-रथोंको पूर्ण करनेके लिये साक्षात् कल्पवृक्ष; **कातरजनशरणम्** = जिनका संसारमें कहीं ठिकाना नहीं, प्रत्युत् सर्वत्र तिरस्कार-ही-तिरस्कार है उन कातर जनोंके शरण (एक मात्र आधार) ॥७॥ वाणीको पावन करनेके लिये बीच-बीचमें '**ॐ हर हर हर महादेव**' यह उच्चारण कराया गया है।

फिर दो श्लोकोंका अन्वय एक साथ है—

जटाकिरीटे गङ्गां चन्द्रकलां भाले, शिवमिन्दुकलां०
नेत्रेष्विन्दुशिखीना २, नधरे स्मितममले ।
कण्ठे गरलं पाणौ वरमभयं शूलं, हर वर०
पीयूषं कटिदेशे २, कृत्तिं च दुकूलम् ॥ ८ ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

श्रीगिरिराजकिशोरीमङ्के निदधानं, शिवमङ्के०
निखिलसुरासुरमौलीन् २, चरणेऽमितदानम् ।
शम्भुं तडिदभिगौरं कृतनागाभरणं, हर कृत०
भजति स गच्छति मुक्तिं २, तिमिरापाकरणम् ॥ ९ ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

जटाकिरीटे = जटामुकुटमें; **गङ्गाम्** = गंगाजीको; **भाले** = कपाल पर; **चन्द्रकलाम्** = दूजके चांद (प्रणवार्धमात्रा) को; **नेत्रेषु** = तीनों नेत्रोंमें; **इन्दुशिखीनान्** = सूर्य, चंद्र और अग्निको; **अमले** = निर्मल (निर्दोष); **अधरे** = ओष्ठ पर; **स्मितम्** = मीठी मुस्कानको; **कण्ठे** = कंठमें; **गरलम्** = विषको; (अनिष्ट-से-अनिष्टकारीपदार्थको भी शिवजी अपने अनुकुल कर सकते हैं-इस आशयको सूचित किया है). **पाणौ** = एक हाथमें; **अभयम्** = सबको निर्भय कर देनेवाले; **वरम्** = श्रेष्ठ; **शूलम्** = त्रिशूलको (तथा दूसरे हाथमें); **पीयूषम्** = अमृतके अक्षय कलशको; **कटिदेशे** = कमरमें; **कृत्तिम्** = गजचर्मरूप; **दुकूलम्** = उमदावस्त्रको; (शौर्यशाली बलिष्ठ प्रचण्ड प्राणियों पर शासन करने में समर्थ है शिव सर्वथा इस भावको ध्वनित किया है ।) **च** = और; **अङ्के**= गोदमें; **श्रीगिरि-राजकिशोरीम्** = पर्वतराज हिमाचलकी पुत्री पार्वतीको; **निदधानम्** = धारण करनेवाले; और **निखिलसुरासुरमौलीन्** = समस्त सुर और असु-रोंके सिरमौरोंको; **चरणे**=प्रणिपात मिषसे चरणोंमें धारण करनेवाले; **असित-दानम्** = अपार ऐश्वर्यको दे डालनेवाले; **तडिदभिगौरम्**=बिजलीके समान गोरे (चमकीले); **कृतनागाभरणम्** = दुहरी जीभोंद्वारा विष उगीलनेवाले सर्पोको भी गलेका हार बना लेनेवाले; (कालरूपी नाग मृत्यु मृत्युञ्जय, भगवान् शिवके आधीन है-इस भावको व्यक्त करनेके लिये ' कृतनागामरणम् ' कहा हैं). **तिमिरापाकरणम्** = दुःखमूल अज्ञानांधकारका नाश करके; **शम्भुम्** = सुखमूल ज्ञान प्रदान करनेवाले (शिवजीका जो कोई जीव); **भजति** = भजन करता है; **सः** = वह; **मुक्तिम्** = मुक्तिको; **गच्छति** = पाता है ॥ ८, ९ ॥

निरुपाधिकरुणासिन्धुर्भीतत्राणपरः, शिव भीत०
दुःखक्षतये भूयात् २, कातरबन्धुवरः ।
यः श्वेतं यमभीतं स्मृतमात्रोऽरक्षत्, हर स्मृतमा०
मा भैषीरिति वादी २, कालं समतक्षत् ॥ १० ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

निरुपधिकरुणासिन्धुः = अकारण एवं अपार करुणाके सागर; **भीतत्राणपरः** = भयभीतोंके त्राण करनेमें तत्पर; **कातरबन्धुवरः** = कातर (निराश्रय) जनोंके बांधवों (आश्रयदाताओं) में सर्वश्रेष्ठ; (और) **यः** = जिसने; **यमभीतम्** = मृत्युसे डरे हुए; **श्वेतम्** = श्वेतनामके राजाको; **स्मृतमात्रः** = स्मरणमात्रसे; **अरक्षत्** = बचा लिया; (और जो) **माभैषीः**= मत डरो; **इति** = ऐसा; **वादी** = कहते हुए; **कालम्** = मृत्युको; **समतक्षत्** = धमकाते थे (वे शिवजी सबके); **दुःखक्षतये** = दुःख का नाश करनेवाले; **भूयात्** = हों ॥ १० ॥

आनन्दाय महेशो युष्माकं भवतात्, शिव युष्माकं०
जन्मजरामृतिशोकात् २, करुणानिधिरवतात् ।
येन सुरासुरनिवहस्त्रातो विषभीतो, हर त्रातो०
नीलकण्ठ इति भूयो २, निगमगणैर्गीतः ॥ ११ ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

(अमृतमंथनके समय समुद्रने उगले हुए) **विषभीतः** = विषसे भयभीत; **सुरासुरनिवहः** = देव दानव आदि सर्व समुदायको (विषपान करके); **येन** = जिसने; **त्रातः** = बचा लिया (और इसी लिये जिसका); **नीलकण्ठः** = * नीलकंठ; **इति** = यों कहके; **निगमगणैः** = समस्त वेदोंनें; **भूयः** = खूब-खूब; **गीतः** = गान किया है; (वह) **महेशः** = महेश्वर; **युष्माकम्** = तुम (आप) सबके; **आनन्दाय** = आनंददाता; **भवतात्** = हों । **करुणानिधिः** = करुणाके भंडार (महेश आप सबको); **जन्मजरामृतिशोकात्** = जन्म, जरा और मृत्युके शोकसे; **अवतात्** = बचावें ॥ ११ ॥

---

*हृषीकेशसे ६, ७ मील दूर दुर्गम पर्वतीय प्रदेशमें 'नीलकंठ' महादेवका मंदिर है । इस आरतीके रचयिता स्वामी श्रीप्रकाशानन्दपुरीजी महाराज एकांतप्रिय होनेके नाते उस मंदिरमें भी जब-तब रह आया करते थे । अतः कैलासाश्रम-हृषीकेशके महात्मालोग उन्हें 'नीलकण्ठ' के उपनामसे भी बुलाते थे ।

यः सृष्ट्यादिविधानं ब्रह्माच्युतरुद्रैः, शिव ब्रह्मा०
निजरूपैस्तनुते यो २, दुर्ज्ञेयः क्षुद्रैः।
तं प्रकाशसुखमच्छं बाधावधिमीशं, हर बाधा०
तनुभेदैरिव भिन्नं २, श्रयत धियामीशम् ॥ १२ ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

यः = जो; **ब्रह्माच्युतरुद्रैः** = ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर (इन); **निजरूपैः** = अपने ही स्वरूपोंद्वारा; **सृष्ट्यादिविधानम्** = सृष्टि, स्थिति तथा लयके कार्यको; **तनुते** = सतत करता रहता हैं (और); **क्षुद्रैः** = क्षुद्र पुरुषोंके द्वारा; **यः** = जिसका; **दुर्ज्ञेयः** = ज्ञान प्राप्त करना दुःशक्य हैं; **तम्** = उस-**प्रकाशसुखम्** = प्रकाशानन्दस्वरूप; **अच्छम्** = स्वच्छ (निरंजन); **बाधावधिम्** = संपूर्ण नामरूपोंके बाधका अंतिम अधिष्ठान; **तनुभेदैः** = कार्यके अनुरूप चतुर्मुखादि विग्रहोंके भेदसे; **भिन्नम्**, **इव** = भिन्न-से प्रतीत होते हुए भी वस्तुतः एक-अभिन्न; **धियाम्** = व्यष्टि, समष्टि बुद्धियोंके; **ईशम्** = मालीक (प्रेरक); **ईशम्** = ईश्वर (महेश्वर) का ही (आप सब लोग); **श्रयत** = आश्रय (शरण) लें ॥ १२ ॥

ॐ जय गङ्गाधर हर शिव जय गिरिजाधीश
शिव जय गौरीनाथ त्वं मां पालय नित्यं
त्वं मां पालय शम्भो कृपया जगदीश ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

शिव = शिव शब्द उच्चारणमें बहुत ही सरल, अत्यन्त मधुर एवं स्वाभाविक ही शान्तिप्रद है। इसकी सिद्धि (उत्पत्ति) "वश कान्तौ" धातुसे हुई है, जिसका आशय यह है कि जिसको सब चाहते हैं उसका नाम 'शिव' है। सब चाहते हैं अखंड आनंदको, अत एव शिव शब्दका अर्थ अखंड आनंद हुआ। जहाँ आनंद है वहीं शांति है और परम आनंदको ही परम

मंगल तथा परम कल्याण कहते हैं, अत एव 'शिव' शब्द का अर्थ परम मंगल या परम कल्याण भी समझना चाहिये। इस भावको लक्ष्यमें रखनेके लिये ही पुनः पुनः 'शिव' शब्दको दुहराया गया है। जिसने सबका हरण (संहार) कर लिया वही तो अन्तमें शेष रहेगा, फिर सृष्टिके समय सृष्टि भी वही करेगा। दूसरा कोई है ही कहां ? जो सृष्टि या पालन करे—यह है 'हर' शब्दका अभिप्राय। इस अभिप्रायको दृढ करानेके लिये वारंवार 'हर' शब्दका प्रयोग हुआ है।

इति श्रीहृषीकेशकैलासाश्रमनिवासिविद्वद्वरिष्ठब्रह्मनिष्ठपरमहंस-
परिव्राजकाचार्य्य १०८ श्रीमत्स्वामिप्रकाशानन्दपुरी-
भिर्विनिर्मितं शिवनीराजनस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

अथ ध्यानम्

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्॥ १॥

उमापतिम् = उमा (ब्रह्मविद्या) के पति (पालन या वितरण कर्ता, शिवतत्त्वैकनिष्ठ पार्वती शिवप्राप्तिके लिये घोर तप करने लगी। माता मेनकाने स्नेहकातरा होकर 'उ' (वत्से)! 'मा' (ऐसातपमत करो) कहा, अतः उनका नाम 'उमा' हुआ); **सुरगुरुम्** = इन्द्रादि देवोंके गुरु; **देवम्** = महादेवजीको (मैं); **वन्दे** = वंदन करता हूं। **जगत्कारणम्** = जगतके अभिन्ननिमितोपादानकारण (शिवजी) को; **वन्दे** = वंदन करता हूं। **पन्नगभूषणम्** = अपने बच्चों का भी भक्षण कर जाना-यह व्यवहार सर्पजातिमें ही देखा जाता है, अन्यत्र नहीं, ऐसे स्वसन्तानभक्षी सर्पोंके साथ भी भूषणका-सा व्यवहार करनेवाले; **मृगधरम्** = मृगधर शंकर (शतपथ

ब्राह्मण १।४ में मृगको यज्ञस्वरूप कहा है, यज्ञके मृगत्व यानि अन्वैषणको धारण करनेवाले) को; **वन्दे** = वंदन करता हूं। **पशूनाम्** = पाशबद्ध जीवोंके; **पतिम्** = पालन (पाशमुक्त) करनवाले (शिव) को; **वन्दे; सूर्यशशाङ्कवह्निनयनम्** = सूर्य, चंद्र तथा अग्निरूप तीन नेत्रवालेको; (चन्द्रके समान आह्लादक, सूर्यके समान अज्ञानतमोनाशक तथा अग्निके समान रागद्वेषादिदोषदाहक तीन नेत्र शिवके हैं). **वन्दे** । **मुकुन्दप्रियम्** = मुकुंद (विष्णु भगवान्) के प्रियको या मुकुंद हैं प्रिय जिसे उसको; **वन्दे** । **भक्तजनाश्रयम्** = भक्तजनोंके एकमात्र आश्रय; **शिवम्** = शिवको; **वन्दे** । **च** = तथा; **वरदम्** = वरदान दे कर; **शङ्करम्** = (सबको) सुखी करनेवाले (शिव) को; **वन्दे** । 'शम्' कहते हैं परम सुखको और 'कर' से करनेवाला समझा जाता है। सो जो परम सुखको करता है वही शङ्कर है। भोले भण्डारी मुँह माँगा वरदान देनेमें कुछ भी आगा-पीछा नहीं सोचते। जरा-सी भक्ति करनेवाले पर भी आपके हृदयका दया-समुद्र उमड पडता है और सबको सुखी कर डालता है ॥ १ ॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम् ।
नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितां साङ्कुशां वामभागे
नानालङ्कारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥ २ ॥

शान्तम् = शांत, (शिवसमान तृष्णात्यागी ही शान्त रह सकता है), **पद्मासनस्थम्** = पद्मासनसे स्थित, **शशधरमुकुटम्** = चंद्रशेखर, **पञ्चवक्त्रम्** = पांच मुखवाले (ईशान, अघोर, तत्पुरुष, वामदेव और संद्योजात-ये पांच शिवजीके मुख हैं। ईशानका अर्थ है-साशक, अघोरका अर्थ है-घोर कर्म भी शिवकृपासे अघोर (मंगलमय) बन जाते हैं, तत्पुरुषका अर्थ है-आत्मस्वरूपमें स्थित रहना, वामदेव हैं-विकारोंके विजेता और सद्योजात हैं-शिशुके समान परम स्वच्छ स्वभाव वा निर्विकार); **त्रिनेत्रम्** = तीन आँखवाले, त्रिकालदर्शी; **दक्षिणाङ्गे** =

दाहिनी बाजुके पांच हाथोंमें, **शूलम्** = अधर्मियोंको आध्यात्मिक आधिदैविक, आधिभौतिक शूल–पीडा देकर धर्मात्मा बनालेनेवाला त्रिशूल, **वज्रम्** = अनर्थनिवारक वज्र, **खड्गम्** = खड्ग, **परशुम्** = पुरुषार्थसूचक, परशु, **च** = और, **अभयम्** = मोक्षसूचक अभयप्रद हस्तमुद्राको; **वहन्तम्** = धारण करनेवाले, (तथा) **वामभागे** = बांयी बाजुके हाथोंमें, **नागम्** = सर्प, **पाशम्** = पाश, (विकाररूप पशुओंका नियमनकरनेके लिये पाश है । पशुप्रायजीवोंको जिसके द्वारा बाँधकर वशमें रखे जाते हैं वह प्रकृति (माया) ही पाश है, पाशको हाथमें धारण करनेका भाव है–मायाको अपनी मुठीमें दबा रखना–माया के वश न होना), **घण्टाम्** = घंटा, **डमरुकसहिताम्** = डमरू, (जन्ममृत्यु राग द्वेष आदिक द्वन्द्वोंको अपनी मुठीमें दबा रखा है, इस तात्पर्यको डमरु धारणसे ध्वनित किया है), **च** = और; **साङ्कुशाम्** = अंकुशको (धारण करनेवाले); **नानालङ्कारदीप्तम्** = अनेक प्रकारके आभूषणोंसे सुशोभित, **स्फटिकमणिनिभम्** = स्फटिक मणिके सदृश उज्वल कांतिवाले, **पार्वतीशम्** = पार्वतीपतिको **नमामि** = नमस्कार करता हूं ।। २ ।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ।। ३ ।।

कर्पूरगौरम् = कपूरके सदृश गोरे (स्वच्छ प्रकाशमय दोषरहित ही गौरवर्ण होता है), **करुणावतारम्** = करुणाके अवतार, **संसारसारम्** = असार संसारमें सारभूत, **भुजगेन्द्रहारम्** = दो हजार जहरीली जीभवाले महाभयंकर शेषनाग जैसे भुजगेन्द्रको भी गलेका हार बना रखनेवाले, (भाव यह है कि जीवन्मुक्त के सामने विरुद्धस्वभावके भयंकर प्राणी भी प्रतिकुलता छोड़के अनुकूल बने रहते); **हृदयारविन्दे** = हृदय कमलमें, **भवानीसहितम्** = भवानीके सहित, **सदा** = बराबर, **वसन्तम्** = निवास करनेवाले, **भवम्** = शिवजीको, **नमामि** = नमन करता हूं ।। ३ ।।

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।

लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ४ ॥

इसका अर्थ 'श्रीशिवमहिम्नःस्तोत्र' के ३२ वे श्लोकमें देखो ॥ ४ ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥ ५ ॥

देवदेव = हें देवोंके भी देव महादेवजी ! **त्वम्** = तू, **एव** = ही, **मम** = मेरी, **माता** = माता है। **त्वम्, एव** = तू ही (मेरा), **पिता** = पिता है। **त्वमेव** = तू ही, **बन्धुः** = बंधु है । **च** = और **सखा** = सखा, **च** = भी, **त्वमेव** = तू ही है। **त्वमेव** = तू ही, **विद्या** = विद्या है। **त्वमेव** = तू ही, **द्रविणम्** = द्रव्य है। (और कहाँ तक कहूं ? मेरा) **सर्वम्** = सर्वस्व (सबकुछ); **त्वमेव** = तू ही तो है ॥ ५ ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
*विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ ६ ॥

करचरणकृतम् = हाथ या पैरसे किये गये, **वाक्कायजम्** = वाणी या कायासे पैदा हुए, **वा** = अथवा, **श्रवणनयनजम्** = श्रोत्र या नेत्रसे उत्पन्न हुए, **मानसम्** = मनसे हुए, **वा** = अथवा, **कर्मजम्** = अन्य किसी कर्मसे उत्पन्न हो गये, **वा** = और, **विहितम्** = विहित, (या) **अविहितम्** = अविहित, (जो कोई मेरे) **अपराधम्** = अपराध हों, **एतत्** = इन, **सर्वम्** = सबको, **क्षमस्व** = माफ कर दीजिये। **शम्भो** = हे शंभो, (आपका) **जय, जय,** = जय हो, जय हो ॥ ६ ॥

---

* विदितमविदितं वेति पाठान्तरम् ।

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शङ्करे
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे ।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमचलामन्यैस्तु किं कर्मभिः ॥ ७ ॥

चन्द्रोद्भासितशेखरे = चंद्रसे देदीप्यमान भालप्रदेशवाले, **स्मरहरे**= कामदेवका नाशकरनेवाले, **गङ्गाधरे** = स्वर्गसे उतरती हुई गंगाजीको जटाजूटमें धारण करनेवाले, **सर्पैः** = सर्पोंसे, **भूषितकण्ठकर्णविवरे** = भूषित कंठ एवं कर्णविवरवाले, **नेत्रोत्थवैश्वानरे** = उठती रहती है वैश्वानर (कामदाहक विद्युत शक्ति) की लाटें जिससे वैसे तृतीयनेत्रवालें, **दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरें** = लंबेलंबे दान्तवाले हाथीके चर्मका सुंदर वस्त्र बनाकर धारण करनेवाले, **त्रैलोक्यसारे** = त्रिलोकीके सार, **हरे** = दुःखको हर कर, **शङ्करे** = सुख करनेवाले भगवान शंकरके स्वरूप-चिंतनमें अपनी-अपनी, **चित्तवृत्तिम्** = चित्तवृत्तिको, **मोक्षार्थम्** = मोक्षप्राप्तिके लिये, **अचलाम्** = स्थिर, **कुरु** = कीजिये । **अन्यैः** = दूसरे, (महत्त्वशाली) **कर्मभिः** = कर्मोंकी, **तु** = तो, **किम्** = क्या आवश्यक्ता है ? कुछ भी नहीं । शिवचिंतनमें वृत्ति टिका ली तो इसमें सब कुछ आगया ॥ ७ ॥

हरिः ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

हरिः = अज्ञानको हरनेवाले, **ॐ** = ज्ञानस्वरूप, **तत्पुरुषाय** = नव द्वार विशिष्ट पुरोंमें निवास करनेवाले तत्पदके लक्ष्यार्थ (शिवस्वरूप) का, (हम गुरु एवं शास्त्रद्वारा) **विद्महे** = ज्ञान प्राप्त करें, (और ज्ञानकी स्थिरताके लिये उन तत्पुरुष) **महादेवाय** = महादेवजीका, **धीमहि** = ध्यान करें, **तत्** = ताकि, **रुद्रः**= पापको रुलानेवाले या रोग नाशक (वे महादेवजी), **नः** = हमें (परमार्थ पथमें अटल रहने की), **प्रचोदयात्** = प्रेरणा करते रहैं ॥ ८ ॥

अथ मन्त्रपुष्पाञ्जलिः

हरिः ॐ

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥१॥

अनन्ताय = देशकालवस्तुकृत अंतसे रहित; **सहस्रमूर्तये** = अनेक मूर्ति (शरीर) वाले; **सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे** = असंख्य हाथ, पैर, आँख, उरु, शिरवाले; **सहस्रनाम्ने** = नाना नामवाले; **सहस्रकोटीयुगधारिणे** = अनंतकोटि युगोंके धारक (जुगजूने); **शाश्वते** = नित्य; **पुरुषाय** = पुरुषको; **नमः, नमः, अस्तु** = नमन हो, नमन हो ॥ १ ॥

विष्णुब्रह्मेन्द्रदेवै रजतगिरितटात्प्रार्थितो योऽवतीर्य
शाक्याद्युद्दामकण्ठीरवनखरकराघातसञ्जातमूर्च्छाम् ।
छन्दोधेनुं यतीन्द्रः प्रकृतिमगमयत्सूक्तिपीयूषवर्षैः
सोऽयं श्रीशङ्करार्यो भवदवदहनात्पातु लोकानजस्रम् ॥२॥

यः = जो (शंकर भगवान्); **विष्णुब्रह्मेन्द्रदेवैः** = ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र आदि देवोंद्वारा; **प्रार्थितः** = प्रार्थना करने पर, **रजतगिरितटात्** = कैलास पर्वतके उन्नत शिखरसे; **अवतीर्य** = उतरके; **यतीन्द्रः** = यतिश्रेष्ठ (शंकराचार्य रूपसे अवतार ले कर); **शाक्याद्युद्दामकण्ठीरवनखरकराघातसंजातमूर्च्छाम्** = शाक्य आदिक नास्तिकलोगरूप जबरदस्त सिंहके तीक्ष्ण नाखूनवाले पंजेके आघातसे मूर्च्छित हुई; **छन्दोधेनुम्** = श्रुतिरूपी कामधेनु को; **सूक्तिपीयूषवर्षैः** = सुवचनरूप अमृतकी वर्षा करके; **प्रकृतिम्** = स्वस्थ (संजीवित, मूर्च्छारहित); **अगमयत्** = करते रहै; **सः, अयम्** = सो यह; **श्रीशङ्करार्यः** = श्रीशंकराचार्य महाराज; **लोकान्** = लोगोंको; **भवदवदहनात्** = संसाररूपी दावानलके दाहसे; **अजस्रम्** = नित्य-निरंतर; **पातु** = बचाते रहैं ॥ २ ॥

पूर्णः पीयूषभानुर्भवमरुतपनोद्दामतापाकुलानां
प्रौढाज्ञानान्धकारावृतविषमपथभ्राम्यतामंशुमाली ।
कल्पः शाखी यतीनां विगतधनसुतादीषणानां सदा नः
पायाच्छ्रीपद्मपादादिमुनिसहितः श्रीमदाचार्यवर्यः ॥३॥

(जो भगवान् शंकराचार्य) **भवमरुतपनोद्दामतापाकुलानाम्** = संसार-रूपी रेगिस्तानमें पडे हुए सूर्यके प्रचंड तापसे व्याकुल जनोंके लिए; (पूर्ण शांतिरूप शीतलता प्रदान करनेवाले) **पूर्णः**=पूर्णिमाके; **पीयूषभानुः** =सुधाकर (चंद्रमा) हैं; **प्रौढाज्ञानान्धकारावृतविषमपथभ्राम्यताम्** = दृढ अज्ञानरूपी अंधकारसे आवृत अत एव विषम पथमें भटकते हुए लोगोंके लिये; (अज्ञानांधकारको हटाके ज्ञानरूप प्रकाश प्रदान कर सन्मार्ग दिखानेवाले) **अंशुमाली** = प्रकृष्टप्रकाश सूर्य हैं; (तथा) **विगतधनसुतादीषणानाम्** = कलत्रेषणा, पुत्रेषणा एवं वित्तेषणा जिनोंकी नष्ट हो चुकी है वैसे; **यतीनाम्** = यति (यत्नशील संन्यासि) योंके लिये, **कल्पः**, **शाखी** = (योगक्षेमवाहक) कल्पवृक्ष हैं; (वे) **श्रीमदाचार्यवर्यः** = श्रीमान् आचार्यश्रेष्ठ (१०८ श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य भगवान् भाष्यकार); **पद्मपादादिमुनिसहितः** = पद्मपादाचार्य आदिक मननशील सभी शिष्योंके सहित; **नः** =हमारी; **सदा** = सर्वदा; (सभी प्रकारसे) **पायात्** = रक्षा करें ॥ ३ ॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥ ४ ॥

ब्रह्मानन्दम् = ब्रह्मानंदरूप; **परमसुखदम्** = परमसुखके दाता; **केवलम्** = अज्ञान रहित; **ज्ञानमूर्तिम्** =ज्ञानस्वरूप; **द्वन्द्वातीतम्** = रागद्वेषादि द्वन्द्वोंसे पर; **गगनसदृशम्** = आकाशवत्-असंग: **तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्** = 'तत्त्वमसि' आदिक महावाक्योंके लक्ष्यार्थ; **एकम्** = एक

(अद्वैत); **नित्यम्** = नित्य (त्रिकालाबाध्य); **विमलम्** = अमल; **अचलम्** = अचल; **सर्वधीसाक्षिभूतम्** = सबकी बुद्धिके साक्षी; **भावातीतम्** = षड् भावविकारोंसे रहित; **त्रिगुणरहितम्** = त्रिगुणातीत; **तम्** = उस; **सद्गुरुम्** = सद्गुरुको; **नमामि** = कोटिशः नमस्कार करता हूं ॥४॥

नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च ।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम् ॥५॥
श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम् ।
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून्संततमानतोऽस्मि ॥ ६ ॥

नारायणम् = (संन्यासियोंके आदिगुरु भगवान्) नारायणको; **अथ** = और; **अस्य** = इनके; **शिष्यम्** = शिष्य, **पद्मभवम्** = ब्रह्माजीको; (ब्रह्माजीके शिष्य) **वसिष्ठम्** = वसिष्ठजीको, (इनके शिष्य) **शक्तिम्** = शक्तिको, **च** = और, **तत्पुत्रपराशरम्** = उनके पुत्र (शिष्य) पराशर मुनिको, (इनके शिष्य) **व्यासम्** = व्यासदेवको, (इनके शिष्य) **शुकम्** = शुकमुनिको, (शुकदेवजीके शिष्य) **गौडपदम्** = गौडपादाचार्यजीको, **च** = तथा, (इनके शिष्य) **महान्तम्** = महान्, **गोविन्दयोगीन्द्रम्** = योगीन्द्र गोविन्दपादाचार्यजीको, **अथ** = और, [गोविन्दपादाचार्यजीके शिष्य] **श्रीशङ्कराचार्यम्** = १०८ श्री भगवानशंकराचार्य महाराजको, **अस्य**=इनके, **शिष्यम्** = शिष्य; **पद्मपादम्** = पद्मपादाचार्यजी; **हस्तामलकम्** = हस्तामलकाचार्यजी; **तम्** = उस (गुरुभक्ति में प्रसिद्ध), **तोटकम्** = तोटकाचार्यजीको; **च** = और; **वार्तिककारम्** = वार्तिककार (सुरेश्वराचार्यजी) को, (तथा) **अन्यान्** = अन्य सब, **अस्मद्गुरून्** = अपने गुरु जनोंको, **सततम्** = सतत, **आनतः** = मनसा, वाचा, कर्मणा नमस्कार करता, **अस्मि** = हूँ ॥ ५, ६

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया ।

यः साक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ७ ॥

यः = जो (दक्षिणामूर्तिरूपधारी सदाशिव); **निजान्तर्गतम्** = अपने अंतरमें प्रतीत होनेवाले; **विश्वम्** = विश्वको; **दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यम्** = दर्पणमें दीखनेवाले नवद्वारवती नगरीके (प्रतिबिम्ब) सदृश (मिथ्या); **पश्यन्** = मानते हुए; **यथा** = जैसे; **निद्रया** = निद्रासे; **आत्मनि** = अपने अंदर (प्रतीत हुए स्वाप्निक दृश्य); **बहिः** = बाहर, **उद्भूतम्**, **इव** = उत्पन्न हुए-से दीखते हैं; (वैसे) **मायया** = (असंभवको संभव कर दिखानेवाली) मायाके द्वारा, स्वस्वरूपमें कल्पित होने पर भी बाहर प्रतीत हो रहे नामरूपात्मक समस्त विश्व (ब्रह्मांड)को भी मिथ्या मानते हुए; (अपने अपूर्व उपदेशसे सनकादिकोंको) **प्रबोधसमये** = प्रत्यक्ष ज्ञान कराते समय; **स्वात्मानम्**, **अद्वयम्** = अपने अद्वय आत्माका; **एव** = ही; **साक्षात्** = साक्षात्कार; **कुरुते** = करा देते है; **तस्मै** = उन; **श्रीगुरुमूर्तये** = श्रीगुरुमूर्ति, **श्रीदक्षिणामूर्तये** = श्रीदक्षिणामूर्तिरूपधारी (शिवजी) को. **इदम्** = यह (नित्यं प्रति किया जानेवाला), **नमः** = नमस्कार पहुँचे ॥ ७ ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ८ ॥

येन = जिस (गुरुदेव) ने; **अखण्डमण्डलाकारम्** = अखंड ब्रह्मांड मंडलरूप, **चराचरम्** = चराचर (स्थावर जंगम जगती) को, **व्याप्तम्** = (सूवर्णसे आभूषणोकी भाँति आत्मस्वरूपसे) व्याप्त कर रखा है, (और) **येन** = जिसने, **तत्पदम्** = तत्पदके अर्थका; **दर्शितम्** = प्रत्यक्ष दर्शन करा दिया है; **तस्मै** = उस, **श्रीगुरवे** = श्रीगुरुदेवको, **नमः** = नमस्कार है ॥८॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ९ ॥

(शिष्यके चित्तमें ज्ञानकी उत्पत्ति करनेवाले) **गुरुः, देवः** = गुरुदेव, **साक्षात्** = प्रत्यक्ष, **ब्रह्मा** = ब्रह्माजी हैं, (पैदा हुए ज्ञानकी अविच्छिन्न उपदेशोंद्वारा रक्षा करते समय) **गुरुः** = गुरुदेव, **विष्णुः** = साक्षात् विष्णु भगवान् हैं, (और शमदमादिमय अपने आचरणोंसे कामक्रोधादि षड्रिपुओंके संहारक) **गुरुः** = गुरुदेव, **महेश्वरः** = साक्षात् महेश्वर हैं, (अरे) **गुरुः** = गुरुदेव; (तो) साक्षात् **परम्** = पर, **ब्रह्म** = ब्रह्म ही हैं, **तस्मै** = उन; **श्रीगुरवे** = श्रीगुदेवको, **नमः** = लाख–लाख प्रणाम ॥ ९ ॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम् ।
नमामि भगवत्पादं शङ्करं लोकशङ्करम् ॥ १० ॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानाम् = श्रुति, स्मृति और पुराणोके रहस्यका **आलयम्** = भंडार, **करुणालयम्** करुणानिधि, **शङ्करम्** = शङ्करावतार, **लोकशङ्करम्** = लोगोंको सुखी करनेवाले, **भगवत्पादम्** = भगवान् शंकराचार्य महाराजको; **नमामि** = नमन करता हूं ॥ १० ॥

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥ ११ ॥

केशवम् = भगवान् विष्णुके अवतार; यानि साक्षात् विष्णु, **बादरायणम्** व्यासदेव; (और) **शङ्करम्** = भगवान् शंकरके अवतार; यानि साक्षात् शंकर, **शङ्कराचार्यम्** = शंकराचार्यजीमहाराज, **सूत्रभाष्यकृतौ** = ब्रह्मसूत्र और उनपर शारीरक भाष्यकी रचना करनेवाले इन दोनों; **भगवन्तौ** = भगवत्स्वरूपोंको; **पुनः, पुनः** = वारंवार; **वन्दे** = वंदन करता हूं ॥ ११ ॥

ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्त्तिभेदविभागिने ।
व्योमवद्व्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तये नमः ॥ १२ ॥

ईश्वरः = ईश्वर; **गुरुः** = गुरु; (और) **आत्मा** = आत्मा; **इति** = इस प्रकारकी, **मूर्तिभेदविभागिने** = मूर्तियोंके भेदसे विभक्त होने पर भी;

(वास्तवमें तो) **व्योमवद्व्याप्तदेहाय** = आकाश की तरह व्याप्त (अवि-भक्त) स्वरूप, **दक्षिणामूर्तये** = दक्षिणामूर्ति शंकरको, **नमः** = नमस्कार हो ॥ १२ ॥

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ॥
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः १३

देवाः = विद्वानोंने, **यज्ञेन** = देवपूजा, संगतिकरण तथा दानादि सत्कर्मों द्वारा, **यज्ञम्** = यजस्वरूप विष्णु भगवानका; **अयजन्त** = यजन किया; **तानि** = वे (पूजादि सत्कर्म); **प्रथमानि** = प्रथम (प्रारंभ) के; **धर्माणि** = धर्म; **आसन्** = थे । **ते** = वे, (विद्वान लोग) **ह** = उन सत्कर्मों के प्रभावसे; **महिमानः** = महिमाशाली बन कर; **नाकम्** = स्वर्ग (परमसुख-रूप परम धाम) में; **सचन्त** = गये; **यत्र** = जहाँ (कि); **पूर्वे** = पूर्व समय के; **साध्याः** = साधक लोग; **देवाः** = देव बनकर; **सन्ति** = पहुँचे हुए हैं ॥ १३ ॥

राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । १४ ।

राजाधिराजाय = राजाधिराज; **प्रसह्यसाहिने** = अकारणही सहायता करने के आदी; **वैश्रवणाय** = कुबेरको; **वयम्** = हम सब; **नमः** = नमस्कार; **कुर्महे** = करें ॥ १४ ॥

स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु १५

मे = मेरी, **कामेश्वरः** = कामनाओंके परीक्षक, **सः** = वह, **वैश्रवणः** = कुबेर भगवान्, **कामकामाय** = मनुष्यलोकसे लेकर ब्रह्मलोक तककी तथा मोक्षकी कामनावाले, **मह्यम्** = मुजको, **कामान्** = ब्रह्मलोकतकके भोग तथा मोक्ष, **ददातु** = दें ॥ १५ ॥

कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥ १६ ॥

वैश्रवणाय = वैश्रवणकुलोत्पन्न, **महाराजाय** = महाराज; **कुबेराय** = कुबेरको, **नमः** = नमस्कार हो ॥ १६ ॥

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ॥
सम्बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः १७

विश्वतश्चक्षुः = सब ओर आँखवाला–अर्थात् समस्त जीवोंके कर्म, विचार तथा समस्त घटनाओंको अपनी दिव्य शक्तिद्वारा नित्यनिरंतर देखते (जानते) रहनेवाला, **उत** = और, **विश्वतोमुखः** = सब तरफ मुखवाला–अर्थात् श्रद्धाभक्तिभरे भक्तोंद्वारा जब कभी एवं जहाँ कहीं समर्पित की गई भोजन योग्य वस्तु (पत्रं पुष्पम्) को सहर्ष भोग लगानेवाला, **विश्वतोबाहुः** = सर्वत्र हाथवाला– अर्थात् सर्व देश कालके प्रत्येक पदार्थको एक साथ पकडनेमें तथा अपने आश्रित जनोंके संकटोंका नाश करके उनकी रक्षा करनेमें समर्थ, **उत** = और, **विश्वतस्पात्** = सब जगह पैरवाला–अर्थात् जिस–जिस कालमें एवं जिस–जिस देशमें उनके भक्त श्रद्धाभक्तिसे उन्हें बुलावें उस–उस कालमें और उस–उस देशमें एकही साथ पहुँच सकनेवाला, **द्यावाभूमी** = आकाश पृथिवी (आदि अनेक नामरूपों) को (अपनी मायासे), **जनयन्** = उत्पन्न करता हुआ (भी); **देवः** = परमात्मा; (वस्तुतः) **एकः** = एक (अद्वैत) ही है। (वह परमात्मदेव मनुष्यादि प्राणियोंको) **बाहुभ्याम्** = दो–दो हाथोंसे, **संधमति** = संयुक्त करता है; (तथा पक्षी पतंग आदिको) **पतत्रैः** = पंखोंसे; **सम्** (**धमति**) = संयुक्त करता है–अर्थात् समस्त जीवोंको आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न शक्ति एवं साधनोंसे संपन्न करता है ॥१७

हरिः ॐ तत्सत् मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि

हरिः = (जो) हरि, (तथा) **ॐ** = ॐ है, (वही) **तत्** = तत् (तथा) **सत्** = सत् है, (उन्हें) **मन्त्रपुष्पाञ्जलिम्** = अभिमंत्रित पुष्पोंकी श्रद्धांजलिको, **समर्पयामि** = समर्पित करता हूं—

नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥
भक्त्या दत्तानि पूजार्थं गृहाण परमेश्वर ॥ १८ ॥

परमेश्वर = हे परमेश्वर ! **यथाकालोद्भवानि** = मोसमके अनुसार उत्पन्न हुए; **च** = और; **नानासुगन्धपुष्पाणि** = अनेक प्रकारकी दिव्य

सुगंधीवाले पुष्पोंको; (मैंने आपकी) **पूजार्थम्** = पूजाके लिये; **भक्त्या** = भक्तिपूर्वक; **दत्तानि** = अर्पण किये हैं; (कृपया) **गृहाण** = स्वीकार कीजिये ॥ १८ ॥

अथ शिवनामावलिः

ॐ महादेव शिव शङ्कर शम्भो, उमाकान्त हर त्रिपुरारे ।
मृत्युञ्जय वृषभध्वज शूलिन्, गङ्गाधर मृड मदनारे ॥

हर शिव शङ्कर गौरीशं, वन्दे गङ्गाधरमीशं ।
रुद्रं पशुपतिमीशानं, कलये काशीपुरनाथं ॥

ॐ = हे ॐ ! **महादेव** = हे महादेव ! (हे) **शिव** ! (हे) **शङ्कर** ! **उमाकान्त** = हे पार्वतीपते ! (हे) **हर** ? **त्रिपुरारे** = हे त्रिपुरासुरका वध करनेवाले ! **मृत्युञ्जय** = हे मृत्युको जीतनेवाले ! **वृषभ-ध्वज** = हे वृषभ-ध्वज ! 'वृषभ' शब्दका अर्थ है-धर्म एवं बैल और ध्वज कहते हैं-ध्वजा एवं वाहनको । शिवजीकी ध्वजामें धर्मके सूचक वृषभका चिन्ह है, अतः शिवजी वृषभध्वज (धर्मध्वजी) हैं । सत्त्वगुणका पूर्ण विकास होने पर ही धर्म लाभ होता है, पशुओंमें सबसे अधिक सत्त्वगुणका विकास गोजातिमें हुआ है; इसी लिये धर्मका प्रतीक वृषभ (बैल) ही शिवजीका वाहन है । भाव यह है कि शिवजी धर्माचरणमें ही आरूढ रहते हैं, अधर्ममें पग धरते ही नहीं । भव भक्तात्माओंके धर्ममय हृदयारविन्दोंमें भवानीके सहित सदा वास करनेवाले हैं-यह भी 'वृषभध्वज' का तात्पर्य है । **शूलिन्** = हे त्रिशूलधारी ! त्रिताप या त्रिगुणमय जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओंसे भी पर, आनन्दमय या त्रिगुणातीत तुरीया अवस्थामें सदा स्थित रहते हैं—यही शिवजीका 'शूलिन्' (त्रिशूलधारी) होना है । (हे) **गङ्गाधर** ? **मृड** = हे स्तुत्य ! **मदनारे** = हे कामदेवके नाशक ! (हे) **हर** ! (हे) **शिव** ! (हे) **शङ्कर** !

गौरीशम् = पार्वतीपति; **गङ्गाधरम्** = गंगाधर; **ईशम्** = ईश्वर (आप) को; **वन्दे** = वंदन करता हूं। **रुद्रम्** = रुद्र । दीन दुखिःयोकी दुर्दशा पर रुदन (आसुबहा, द्रवीभूत हो) कर, द्रुतगतिसे उनके अश्रुओंको आनन्दाश्रुओंमें परिणत कर डालते हैं; अतः शिवजी 'रुद्र' कहलाते हैं। 'रु' रुलाते हैं (पश्चात्ताप कराके सरल बनाते हैं) 'द्र' कुत्सितगति (अत्याचारि) योंको, इस वास्ते भी शिव 'रुद्र' हैं। **पशुपतिम्** = पशु (पापरूप या पाशबद्ध जीव) को पाप या पाशमुक्त करनेवाले; (और) **ईशानम्**= सब पै शासन करनेवाले; (और) **काशीपुरनाथम्** = काशीपुरीके नाथ; (शिवजी त्रिगुणरूप त्रिशूलपर विश्वरूप काशीपुरीको वसा कर विश्वनाथ हुए हैं और जबतक त्रिगुणात्मक प्रकृतिमें शिवकी सत्ता रहैगी. तबतक विश्वरूप काशीपुरीका नाश नहीं हो सकता। आपका मैं हृदयसे); **कलये** = रटन करता हूं।

जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशङ्कर जय शम्भो ॥

जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशङ्कर जय शम्भो

(हे) **शम्भो ! जय** = (आपका) जय हो, **शम्भो जय** (हे) **शिव !** (हे) **गौरीशङ्कर ! शम्भो जय**, पुनरपि '**जयशम्भो**' इत्यादि पूर्ववत् ।

शिव शिवेति शिवेति शिवेति वा, हर हरेति हरेति हरेति वा ॥
भव भवेति भवेति भवेति वा, मृड मृडेति मृडेति मृडेति वा ॥
भज मनः शिवमेव निरन्तरम् ॥

शिव, शिव, इति = इस प्रकार; **शिव, शिव, इति-इति** = इसी तरह, **वा** = अथवा; **हर, हर, इति** = इस रीतिसे; **हर, हर, इति-इति** = इस रीतिसे ही; **वा** = या; **भव, भव, इति** = इस प्रकार; **भव, भव, इति-इति**= इस प्रकारसे ही; **वा मृड, मृड, इति**= इस प्रकार, **वा, मृड, मृड, इति-इति** = इसी प्रकारसे; **मनः** = हे मेरे मननशील मन ! **शिवम्** = शिवजीका; **एव** = ही; **निरन्तरम्** = अहर्निश (एक क्षणका भी आलस्य किये विना) **भज** = भजन करता रह ।



॥अथ श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम्॥

गजाननं भूतगणाधिसेवितं, कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं, नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

भूतगणाधिसेवितम् = भूतगणोंकेद्वारा अपने-अपने अधिकारके अनुसार सेवित; **कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्** = कैंथ तथा जांबुनके (गजभुक्त कपित्थका दृष्टांत प्रसिद्ध है।) उत्तम फलोंके भक्षक; **शोकविनाशकारकम्** = शोकके विनाशक; **विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्** = जिनके चरणकमल ही विघ्नोंके नियामक (निवारक) हैं उन; **उमासुतम्** =पार्वती-पुत्र; **गजाननम्** = गजमुख (भगवान गणेशजी) को; (नित्यंप्रति तथा सर्वप्रथम) **नमामि** = नमस्कार करता रहता हूं।

श्रीपुष्पदन्त उवाच-

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृण-
न्ममाप्येषः स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥ १ ॥

अन्वयार्थः—

हर = अज्ञान-पाप-तापको हरनेवाले हे शिवजी ! **ते** = तेरी (निर्गुण-निराकार निर्मायिक, आपकी) **महिम्नः** = महिमाको, **परम्** = अंतिम, **पारम्** = अवधि तक-अर्थात् पूर्णरूपसे, **अविदुषः** = न समझने वाले-अनजान आदमीके द्वारा की हुई आपकी, **स्तुतिः** = स्तुति, **यदि** = यदि,

असदृशी = आपके स्वरूपके योग्य नहीं है अर्थात् जैसी होनी चाहिये वैसी नहीं हो पायी है, **तद्** = तब तो, **ब्रह्मादीनाम्** = वाणीके अध्यक्ष ब्रह्मादि देवोंकी, **अपि** = भी, **गिरः** = वाणी (स्तुति), **त्वयि** = आपके लिये, **अवसन्नाः** = अयोग्य ही है। **अथ** = और जो कदाचित्, **सर्वः** = सब कोई **स्वमतिपरिणामावधि** = अपनी अपनी बुद्धिशक्तिके अनुरूप, **गृणन्** = स्तुति करनेपर, **अवाच्यः** = निर्दोष है, (तब तो) **मम** = मेरा, **अपि** =भी, **स्तोत्रे** = आपकी स्तुति करनेमें, **एषः** = यह (महिम्नःस्तोत्रनिर्माणरूप), **परिकरः** = प्रयत्न; **निरपवादः** = निर्दोष ही हैं, किसी प्रकार निन्दनीय हो ही नहीं सकता, ॥ १ ॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो–
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ २ ॥

(हे हर ?), **तव** = तेरा (तुम्हारा-आपका), **महिमा** = माहात्म्य, **च** = तो, **वाङ्मनसयोः** = वाणी एवं मनके, **पन्थानम्** = मार्ग (विषय) से, **अतीतः** = पर या अलग है, (क्योंकि) **यम्**=जिस आप या आपके निर्गुण–निराकार अनिर्वचनीय माहात्म्य या स्वरूपको, **श्रुतिः** = वेद, **अपि** = भी, **अतद्व्यावृत्त्या** = भागत्यागलक्षणादिद्वारा (प्रतिपादन करने पर भी कहीं अनुचित वर्णन न हो जाय), **चकितम्** = इस भयसे आश्चर्यान्वित होता हुआ, **अभिधत्ते** = प्रतिपादन करता है। (और भी), **सः** = उस (सगुण-निराकार परमात्माकी), **कस्य**= कौन, **स्तोतव्यः** =यथार्थ स्तुति कर सकता है? अर्थात् कोई नहीं, (कारण कि) **कतिविधगुणः** =(वह सगुणनिराकार परमेश्वर) कितने ही (अनन्त) प्रकारके गुणोंवाला है, तात्पर्य कि सान्त वाणी या बुद्धि अनन्तका गान या ज्ञान किसी प्रकार भी कर नहीं पाती; (तथा वह परमात्मा) **कस्य** = किस शब्द या अन्तःकरणकी वृत्तिका, **विषयः** = विषय हो सकता है ? स्वयं विषयी या निर्विषय होनेके कारण वाच्यरूपसे किसीका भी नहीं हो सकता, (तथापि हे भक्ताधीन भोलेनाथ ! आपके) **अर्वाचीने** =

नवनिर्मित (परम रमणीय), **पदे** = सगुणसाकार स्वरूपमें, **तु**= तो, **कस्य** = किसका, **मनः** = मन, **न** = नहीं, **पतति** = रम जाता ? (और किसकी) **वचः**= वाणी, **न**=नहीं, तन्मय हो जाती ? अर्थात् परम रमणीय आपके सगुण-साकाररूपका गुणगान या वर्णन करनेमें सब किसीके मनवाणी मस्त हो जाते हैं॥२॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत–
स्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ३ ॥

ब्रह्मन् = हे ब्रह्मस्वरूप शिवजी ! **मधुस्फीता** = शहदमें सनी हुई-अर्थात् संसारके समस्त मधूर पदार्थोंसे भी अत्यन्त मधुर, **परमम्** = सर्वथा निर्दोष, **अमृतम्** = अमृतमय, **वाचः** = वेदवाणीको, **निर्मितवतः** = (निःश्वासरूपसे) निर्माण करनेवाले, **तव** = (सर्वज्ञ सर्वशक्ति अन्तर्यामी) तेरे (आप) को, **सुरगुरोः** = देवगुरु (बृहस्पतिजी) की, **अपि** = भी, **वाक्** = वाणी (स्तुति), **किम्** = क्या, **विस्मयपदम्** = आश्चर्यमें डालनेवाली हो सकती है ? अर्थात् नहीं; सर्वश्रेष्ठ वेदवाणीकी रचना करनेवाले आपके लिये देवराज या देवगुरुकृत स्तुति भी विस्मय-जनक नहीं बन सकती । **तु** = फिर भी, **पुरमथन** = त्रिपुरासुरका उद्धार करनेवाले हे शिवजी ! (मैं तो) **मम**=मेरी, (अपनी) **एताम्** = इस (गंदी), **वाणीम्** = वाणीको **भवतः** = आपके, **गुणकथनपुण्येन** = गुणगान करनेसे उत्पन्न होनेवाले पुण्यके द्वारा, **पुनामि** = पावन करलूं, **इति** = इस लिये, **अस्मिन्** = इस, (आपके गुणगान ‘ स्तुति ’ रूप) **अर्थे** = कार्यमें, **बुद्धिः** = मेरी बुद्धि, **व्यवसिता** = तत्पर हुई है ।। ३ ।।

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।

अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः॥ ४ ॥

वरद = हे वरदान देकर सबको निहाल कर देनेवाले शंभो ! **जगदुदय-रक्षाप्रलयकृत्** = जगतका उदय (सर्जन) पालन एवं प्रलय (व्यवस्थापन) करनेवाला, **त्रयीवस्तु** = ऋक् यजुः साम आदिक सभी वेद जिसका वस्तु (वास्तविक) रूपसे प्रतिपादन करते हैं, तथा **गुणभिन्नासु** = सत्त्व रजः तमोगुणके भेदसे भिन्न, **तिसृषु** = (ब्रह्मा विष्णु महेश इन) तीनों, **तनुषु** = शरीरों-मूर्तियोंमें, **व्यस्तम्** = बटा (विभक्त) हुआ, **यत्** = जो, **इह** = यहां (ब्रह्माण्डभरमें), **तत्** = प्रसिद्ध, **तव** = तेरा (आपका), **ऐश्वर्यम्** = ऐश्वर्य (माहात्म्य) हैं, **विहन्तुम्** = उसका खंडन करने के लिये, **एके** = कई एक, **जडधियः** = जडबुद्धिवाले (नास्तिक लोग), **अभव्यानाम्** = कुबुद्धि लोगोंको **रमणीयाम्** = अच्छी लगनेवाली, (लेकिन असलमें) **अरमणीम्** = बुरी (अहितकर); **अस्मिन्** = आपके ऐश्वर्यके विषयमें, **व्याक्रोशीम्** = मिथ्या कल्पनाओंकी चीं-पों, **विदधते** = मचाते रहते हैं ॥ ४ ॥

अब उन जडबुद्धियोंकी चीं-पोंका नमुना दिखलाते हैं—

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः॥ ५ ॥

(त्रिभुवन निर्माणके समय) **सः** = वह, **धाता** = त्रिभुवननिर्माता ब्रह्मा, **किमाधारः** = किस आधार पै बैठके, **किमीहः** = किस इच्छासे-किसके लिये, **किंकायः** = किस शरीरसे, **किमुपायः** = किन उपायों (साधनों या औजारों) से, और, **किमुपादानः** = किन कारणों (पदार्थों या मसालों) से, **त्रिभुवनम्** = तीनों लोक या समस्त ब्रह्मांडको, **सृजति** = पैदा करता

है, **इति** = इस तरहका, **अयम्** = यह, **कुतर्कः** = कुतर्क, **अतर्क्यैश्वर्ये** = जिनका ऐश्वर्य तर्कका विषय नहीं बन सकता ऐसे, **त्वयि** = तेरे (आपके) संबंधमें, **अनवसरदुःस्थः** = अवकाश न पाकर डावाँडोल हुआ भी, **जगतः** = जगतको, **मोहाय** = अज्ञान या भ्रममें फसा रखनेके लिये, **कांश्चित्** = कुछेक, **हतधियः** = नष्टबुद्धि अथवा बुद्धिहीन जनोंको, **मुखरयति** = वाचाल तथा बकवादी बनाता रहता है ॥ ५ ॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥

अमरवर = देवताओंमें श्रेष्ठ हे महादेवजी ! **इमे** = ये (प्रत्यक्ष अनुभवमें आनेवाले), **लोकाः** =पृथिवी आदिक लोक या अवलोकनके विषय पदार्थ, **अवयववन्तः** = सावयव (होनेपर), **अपि** = भी, **किम्** = क्या, **अजन्मानः** = जन्मरहित हो सकते, हैं ? (नहीं हो सकते, क्योंकि जो पदार्थ अवयववाले हैं वे सबके सब उत्पत्ति स्थिति एवं नाश सहित ही हुआ करते हैं और), **किम्** = क्या, **भवविधिः** = जगतके जन्म आदिक कार्य, **जगताम्** = भू आदि चतुर्दश भुवनोंके, **अधिष्ठातारम्** = कर्ताके, **अनादृत्य** = विना ही, **भवति** = हो सकता है ? (नहीं, कर्ताके विना कोई भी कार्य कभी हो ही नहीं सकता) **वा** = यदि, (कहा जाय कि) **अनीशः**= ईश्वरसे भिन्न या साम्यर्थहीन कोई जीव ही (जगतका), **कुर्यात्** = करनेवाला हो सकता है, (तो) **भुवनजनने** = भू आदि भुवनोंके उत्पन्न करनेमें (सामर्थ्यहीन उस जीवरूपी कर्ताके पास जगतको पैदा करनेके लिये), **कः** := कौनसी **परिकरः** = साधनसामग्री है ? अर्थात् जीवके पास कुछ भी साधनसंपत्ति न होनेके कारण वह कर्ता नहीं हो सकता, (तो फिर वे लोग वैसी बेशिरपैरकी कुशंकायें क्यों किया करते हैं) **यतः** = इस लिये कि, **मन्दाः** = वे मन्दभाग्य और मंदबुद्धि भी हैं अत एव, **त्वाम्** = आपके, **प्रति** = विषयमें, **संशेरते** = संशयात्मा ही बने रहते हैं ॥ ६ ॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥

त्रयी = तीनों (सब) वेद, **सांख्यम्** = सांख्यशास्त्र, **योगः** = योगशास्त्र **पशुपतिमतम्** = पाशुपतशास्त्र (शैवमत), **वैष्णवम्** = वैष्णवमत, **इति** = इत्यादिक, (सच्चिदानंदसागर परब्रह्म परमात्माकी प्राप्तिके लिये साक्षात् परम्परया वा उपयुक्त) **प्रभिन्ने** = भिन्न-भिन्न, **प्रस्थाने** = मार्गों वा मतम. तान्तरोंमेंसे, **इदम्**= यह (हमारा मत), **परम्** = परे (दूर कुटिल क्लिष्ट होने पर भी साक्षात् मोक्षदेनेवाला होनेसे श्रेष्ठ है, और) **अदः** = वह (उनका-दूसरोंका पन्थ), **पथ्यम्** = पंथमें-मार्गमें चलते समय ही हितकर एवं सरल होनेपर भी परंपरया मोक्षदायक होनेसे श्रेष्ठ नहीं है, **इति** = इस प्रकार, **रुचीनाम्** = रुचियोंके, **वैचित्र्याद्**= भिन्नभिन्न होनेसे, **ऋजुकुटिलनाना-पथजुषाम्** =अपनी अपनी रुचिके अनुसार टेढे सीधे अनेकमार्गोंके अनुयायी, **नृणाम्** = मनुष्योंको, **पयसाम्** = उखडबाखड नानामार्गोंसे प्रवाहित होनेवाले जलप्रवाहको, **अर्णवः** = समुद्रके, **इव** = समान, **त्वम्** = आप ही, **एकः** = एक मुख्यरूपसे, **गम्यः** = प्राप्त करने योग्य, **असि** = हैं। अर्थात् जैसे जल कहींसे भी चलकर एक समुद्रमें ही पहुंचता है वैसे ही किसी भी संप्रदाय से चलनेवाले जिज्ञासुजन एक आप (शिवजी) कोही प्राप्त करते हैं, बशर्ते कि चलते रहें ॥ ७ ॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥

वरद = 'वर' उत्तमोत्तम पदार्थोंको, 'द' देकर सबको मालामाल बना डालनेवाले हे शंकर! (आपके पास सवारीके लिये) **महोक्षः** = बूढा बैल है जिसकी तीन टांगे नदारत है, (घरको सजाने योग्य फर्निचरमें) **खट्वाङ्गम्** = खाटका एक अंग (पाया) मात्र है, (ओजारोंमें धुणीकी लकडी फाडनेके लिये विना धार और बेंटेका एक) **परशुः** = फरसा या गँढासा है, (ऐब ढांकनेके लिये एक जीर्णशीर्ण) **अजिनम्** = व्याघ्र मृग या गज चर्मका टुकडा है, (शरीरमें उबटन लगाने के लिये) **भस्म** = किसी भाग्यशाली भक्तके देहकी खेह (राख) है, (शरीरको सुशोभित रखनेके लिये झेवरोंमें) **फणिनः** = थोडेसे फणधर सर्प और दो चार टोकरे विच्छु हैं, **च** = और, (भोजनादिके लिये पात्रोंमें) **कपालम्** = किसी ब्रह्मवेत्ताके शिरकी खोपडी है, **इति** = उत्तरोक्त, **इयत्** = इतनी ही, **तव** = आपके, **तन्त्रोपकरणम्** = गृहव्यवहारको चलाने की सामग्री और संपत्ति है। इससे तो मालूम होता है कि हे आशुतोष शिवजी! आप वरद न होकर महादरिद्र ही है; किंतु नहीं, ऐसा होना संभव नहीं हो सकता; क्यों? तो सुनिये। **सुराः** = सुकर्ममें रत रहनेवाले सुकृतिजन एवं इन्द्रादि देवता सबके सब, **ताम् ताम्** = उस उस अवर्णनीय और अलौकिक, **ऋद्धिम्** = समृद्धिको, **भवद्भ्रूप्रणिहिताम्** = आपके ही कृपाकटाक्षसे प्राप्त करके, **दधति** = स्वतंत्ररूपसे उपभोग कर रहे हैं, (हे सदाशिव! आप ऐसे अनोखे दाता हैं) **तु** = तो फिर अपने लिये थोडीसी भोगसामग्री रख क्यों नहीं छोडते? इस पर कहते हैं- **हि** = जब कि, **स्वात्मारामम्** = अहर्निष अपने स्वरूपभूत आत्मामें ही रमणकरनेवाले जीवको भी, **विषयमृगतृष्णा** = भोग्य पदार्थोंसे प्राप्त होनेवाले शब्द स्पर्श रूप रस गंधरूपी विषयोंकी मृगतृष्णा, **न भ्रमयति** = भ्रममें भुलाकर अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकती, तो फिर आत्मस्वरूप शिवको नहीं भ्रमा सकती इसमें तो कहना ही क्या? ॥ ८ ॥

ध्रुवं काश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।

समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ ९ ॥

पुरमथन = हे त्रिपुरारे ! **कश्चित्** = कोई एक सत्कार्यवादी सांख्यादिमतानुयायी, **इदम्** = यह, **सर्वम्** = स्थूलसूक्ष्मादि सब पदार्थसमूदाय, **ध्रुवम्** = नित्य यानि नाशरहित है इस प्रकार, **गदति** = स्पष्टस्वरसे उद्घोष करता है, **अपरः** = ओर कोई बौधादि मतानुसारी, **सकलम्** = सारा-का-सारा ब्रह्माण्डान्तरवर्ती वस्तु समुदाय, **अध्रुवम्** = अनित्य यानि नाशवान्, असत् या शून्य बताता है, **तु** = तथा, **परः** = अन्य कोई न्यायवैशेषिकादि–मतावलंबी, **ध्रौव्याध्रौव्ये** = नित्यत्व तथा अनित्यत्वका, **जगति व्यस्तविषये** = विषय विश्वके पदार्थोंमें विभक्त है अर्थात् सावयव पदार्थ स्थूलरूपसे अनित्य तथा परमाणु आदिक निरवयव सूक्ष्म पदार्थ नित्य हैं–ऐसा मानता है। **एतस्मिन्** = इन, **समस्त**= सब मतवादोंके कारण, **विस्मितः**, **इव** = अचंभितसा होकर, **अपि**= भी, **तैः** = उन मतमतांतरों के द्वारा, **त्वाम्** = आपकी, **स्तुवन्** = स्तुती करता हुआ, (मैं) **न जिह्रेमि** = शर्मिंदा नहीं हो रहा हूँ, **ननु** = सचमुच, **मुखरता** = वाचालता, **खलु** = ही, **धृष्टा** = धीठ हुआ करती है अर्थात् मैं ठहरा बकवादी, सो आपकी स्तुति करनेमें आगेपीछेका और उचित-अनुचितका भान न रख कर धीठ एवं निर्लज्जकी तरह जो कुछ मनमें आता है, बकता ही चला जाता हूँ।

एक समय ब्रह्मा और विष्णुका ' हम दोनों में कौन बड़ा है ' इस विषयपर झगडा हो गया। शिवजीने उनके सामने लिङ्गार ज्योतिः स्वरूपमें प्रकट होकर उन पर अनुग्रह किया और उनके विवादका निर्णय दिया, इस कथाको इस दशवें श्लोकमें संक्षेपसे कहा जाता है— ॥ ९ ॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।

ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १० ॥

(हे) **गिरिश** = हिमगिरिकी गोदमें समाधिमग्न शंकर ! **अनलस्कन्ध-वपुषः** = आगके खंभे समान ज्योतिर्मय आकृतिधारी, **तव** = आप (ईश्वर) का, **यत्** = जो, **ऐश्वर्यम्** = लिंगाकार स्वरूप है (उसका), **परिच्छेत्तुम्**= थाह पानेके लिये, **विरिञ्चिः** = ब्रह्मा, **उपरि** = उपरके भागमें (और) **हरिः** = भक्तभयहारी भगवान विष्णु, **अधः** = नीचेके हिस्सेकी तरफ, **यत्नात्** = पूर्ण प्रयत्नपूर्वक, **यातौ** = गये; (परन्तु देवताओंके हिसाबसे हजारो वर्ष पर्यन्त दौड लगाते रहने पर भी जब) **अनलम्** = पार न पा सके, **ततः** = तब, (दुराग्रह छोडकर) **भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्याम्** =भक्ति और श्रद्धाके भारसे नम्र होकर खूब स्तुति करते हुए, **ताभ्याम्** = वे दोनों, **तस्थे** =आपके उस ज्योर्तिलिंगके समक्ष शरणागत भावसे चुपचाप खडे हो गये । बाद आपने उन दोनोंके झगडे का फैसला दिया और उन्हें अपने शुद्ध-स्वरूपका साक्षात्कार कराया । हे भोले भंडारी ! **तव** = आपका, **अनुवृत्तिः** = श्रद्धाभक्तिपूर्वक किया हुआ अनुवर्तन–शरणागतादिरूप अनुसरण, **किम्** = क्या क्या, **न फलति** = फल नहीं देता ? अपितु आपकी सेवासे इह लोक परलोक और मोक्ष तक सभी मनोवांछित फल सहज ही मिल जाया करते हैं ॥ १० ॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्योयद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥ ११ ॥

त्रिपुरहर = हे स्थूल सूक्ष्म कारण इन तीनों पुरों (शरीरों) को हर (खींस) लेनेवाले अथवा तीनों शरीरोंमें आसक्तजीवभावरूप त्रिपुरासुरका संहार करनेवाले कृपालु शंकर ! **यत्** = जो कि, **दशास्यः** = दशमुख रावण, **त्रिभुवनम्** = भूर्भुवः स्वः तीनों लोकोंको, **अयत्नाद्** = विना ही विशेष

परिश्रमके अर्थात् सहज ही में, **अवैरव्यतिकरम्** = वेरभावके लेशसे भी रहित अर्थात् निष्कण्टक, **आपाद्य** = बनाकर अर्थात् लडाईकी ललकारका जवाब देनेवाला और संग्राममें सामना करनेवाला त्रिलोकीमें भी कोई न मिलनेके कारण, **रणकण्डूपरवशान्** = युद्ध खेलनेकी खाज जिनमें बराबर लगी रहती है वैसी, **बाहून्** = बीस-बीस भुजाओंको, **अभृत** = लिये स्वच्छन्द बिहरा करता था, **इदम्** = यह सब, **शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः** = अपने मस्तकोंको अपने ही हाथसे एकएक करके काटकर हवनकुण्डमें कईवार होमा है-ऐसी बलि (बलिदान कुर्बानी) है जिसमें अर्थात् आपके पादपद्मोंकी पूजाके लिये अपने मस्तकरूप कमलोंकी मालायें बनाकर सादर समर्पित किया है जिनमें वैसी, **स्थिरायाः** = रावणद्वारा की गई स्थायी, **त्वद्भक्तेः**= आपकी भक्तिके, **विस्फूर्जितं**=प्रतापका ही स्फुरण है ॥११॥

रावण ने शिवकी कृपासे महत्ता पायी और प्रभुताके मदमें अहशान भूलकर शिवसे ही उलझ पडा तो उसे स्वर्ग या मृत्युलोकमें तो क्या पातालमें भी स्थान न मिल सका। जिनसे बडे बने उनहींसे ऐंठनेका फल यही तो होना चाहिये और होता भी है इस आशयका इस बारहवें श्लोकसे प्रतिपादन किया जाता है—

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि,
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥ १२ ॥

त्वदधिवसतौ = आपके निवासस्थान, **कैलासे** = कैलास पर्वत पर, **अपि** = ही, **त्वत्सेवासमधिगतसारम्** = आपकी सेवा (कृपा) से ही प्राप्त हुई है शक्ति जिसमें वैसे, **भुजवनम्** = भुजाओंके बनको अर्थात् बाहुबलको, **बलात्** = हठात् (घमंडसे), **विक्रमयतः** = आजमानेवाले, **अमुष्य** = उस रावणकी क्या दशा हुई ? सुनिये। **त्वयि** = आपके, **अलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि** = पादांगुष्ठका अग्रभाग यों ही हिल गया और उससे कैलास जरासा दबा इतनेही में, **पाताले** = पातालमें, **अपि** = भी,

प्रतिष्ठा = ठहराव या टिकाव, **अलभ्या आसीत्** = उसे नहीं मिला और वह रावण नीचेसे भी ठेठ नीचे गुडकता गया, **ध्रुवम्** = अवश्यमेव, **खलः**= दुष्ट, अधूरा, **उपचित**=तरक्की पाकर, **मुह्यति** = मोहमें फस जाता है और उन्नतिके अभिमानमें उपकारको भूल बैठता हैं। ॥ १२ ॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती–
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वच्चरणयो–
र्न कस्या उन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १३ ॥

हे **वरद** = विना माँगे ही अनधिकारीको भी दोनों हाथोंसे वरदान बाँटते रहनेवाले हे भोले बाबा ! **यद्** = जो कि, **परिजनविधेयत्रिभुवनः** = त्रिलोकीको आज्ञाकारी सेवक बना रखनेवाले बहादूर, **बाणः** = बाणासुरने, **परमोच्चैः** = सबसे बहुत बढीचढी, **सतीम्** = हुई, **अपि** = भी, **सुत्राम्णः** = त्रिलोकीके राजा इन्द्रकी, **ऋद्धिम्** = संपत्तिको, **अधः** नीची, **चक्रे** = कर दिया। **तत्** = वह नीचा दिखला देना, **त्वच्चरणयोः** = आपके चरणोंमें **वरिवसितरि** = सेवाभावसे रहनेवाले, **तस्मिन्** = उस बाणासुरके लिये, **न चित्रम्** = कोई आश्चर्यकी बात नहीं है; क्योंकि **त्वयि** = आपके सामने, **शिरसः** = शिरको, **अवनति** = नीचा करना, **कस्यै** = कौनसी, **उन्नत्यै** = उच्च स्थितिके लिये, **न** = नहीं **भवति** = हो सकता ? अर्थात् सर्व प्रकारकी उन्नतिके लिये होता है ॥ १३ ॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥ १४ ॥

हे **त्रिनयन** = त्रिनेत्र ! **अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-**

विधेयस्य = अमृतमन्थनोत्पन्न विषसे ब्रह्माण्डभरके अकालमृत्युकी नौबत आ गई और उसके भयसे भयभीत हुए देव और दानवों पर कृपापरवश होकर, **विषम्** = समुद्रसे निकले हुए उस हलाहल कालकुटविषको, **संहृतवतः** = संहार (आचमन करके हजम) कर डालनेवाले, **तव** = आपके, **कण्ठे** = कण्ठ पर, **यः** = जो, **कल्माषः** = काला दाग लग गया है, **सः** = वह, **किम्** = क्या, **श्रियम्** = आपके गलेकी शोभाको, **न** = नहीं, **कुरुते** = बढाता ? यह बात नहीं किंतु जरुर बढा रहा है, **अहो** = उचित ही है कि, **भुवनभयभङ्गव्यसनिनः** = ब्रह्माण्डके भयका नाश करनेमें लगे हुए सज्जनोंका, **विकारः** = विकार, **अपि** = भी **श्लाध्यः** प्रशंसनीय समझा जाता है, निंदनीय नहीं। उसने नीलकण्ठ नामसे प्रशंसा ही की ॥ १४ ॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभू–
त्स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥

हे **ईश** = कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं समर्थ सर्वेश्वर ! **यस्य** = जिस (कामदेव) के, **विशिखाः** = तीक्ष्ण बाण, **सदेवासुरनरे** = देव दानव और मानवसे खिचोखीच भरे पडे, **जगति** = जगतभरमें, **क्वचिद्** = कहींसे, **अपि** = भी, **नित्यम्** = हमेंशा, **असिद्धार्थाः** = आपना काम किये विना, **न एव निवर्तन्ते** = लौटते ही नहीं । **सः एव** = वही (देव दानव मानव आदि संसारके सभी प्राणियों पर अपने तीखे तीरोंसे सदा विजय पानेवाला) **स्मरः** = पुष्पधन्वा, कामदेव, **त्वाम्** = आप (महादेव) को, **इतरसुरसाधारणम्** = अन्य देवताओंके समान सामान्य देव, **पश्यन्** = समझता हुआ, अर्थात् मतलबी देवताओंके बहकानेसे आप सर्वेश्वर या महेश्वरको भी, एक मामुली देव समझकर आप पर भी अपने कामयाबबाणोंके द्वारा विजय पानेके लिये आपकी समाधिमें विघ्न करता हुआ, **स्मर्तव्यात्मा** = **अमूत्** = आपके तृतीय (ज्ञान) नेत्रसे निकले ज्ञानाग्निसे जलमरा, **हि** = ठीक ही तो

है, **वशिषु** = अपने शरीर इन्द्रिय प्राण अन्तःकरण आदिको वशमें रखनेवालोंका, **परिभवः** = अनादर, **पथ्यः** = हितकर, **न** = नहीं होता ॥ १५ ॥

महीं पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥

(हे नटराज ! जब आप तांडव नृत्य करते हैं तब आपके) **पादाघाताद्** = उठाये हुए पैरको तालके साथ पृथिवी, पर रखते समय लगनेवाले आघातसे, **मही** = पृथिवी, **सहसा** = अचानक, (इतनी डामाडौल हो जाती है कि) **संशयपदम्** = यहाँ गिरेगी कि वहाँ, उच्छलकर आकाशमें उड जायगी कि घसकर पातालमें पेठ जायगी इत्यादि संदेह स्थितिको, **व्रजति**= प्राप्त हो जाती है मानो खेलाडीके पैरसे ठुकराया गया गेंद, **विष्णोः** =विष्णु भगवानके, **पदम्** = पद (डग) आकाशमें, **भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रह गणम्** =नाचते समय उपर उठाई हुई और इधरउधर घूमायी जाती हुई भुजाओंके थपेडोंसे तारागण चोटें खाकर चटपटाते हैं अर्थात् भुजाओंके आघातसे उपर आकाशमें इधर उधर उच्छलते हुए ग्रहोंकी भगदड मची है । और आकाश उपद्रवका अड्डा बन गया है । **द्यौः** = स्वर्ग भी, **अनिभृतजटाताडिततटा** = खुली हुई जटाका झटका किसी एक कोने किनारमें लगजानेसे, **मुहुः** = वारंवार, **दौस्थ्यम् याति** = अपनी स्थिति (धुरी) से छटककर इतस्ततः ढुलक रहा है, **ननु** = यद्यपि, **त्वम्** = आप, (दैत्योंको मोहकर उनके उपद्रवोंसे) **जगद्रक्षायै** = मही आदि जगतकी रक्षाके लिये, **नटसि** = नृत्य करते हैं, (तथापि) **विभुता** = वैभव (महत्व), **वामा एव** = विपरित ही हुआ करता है अर्थात् वैभवशालियोंके खेल भी वैभवहीनोंके दुःखका कारण बन जाते हैं ॥ १६ ॥

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।

जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥ १७ ॥

इस श्लोकमें गंगावतरणमिषसे पूर्वोक्त विभुताका वर्णन है। **वियद्व्यापी**= समस्त आकाशको व्याप (घेर) लेनेवाला, (और) **तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः** = प्रतिबिंबित तारागणोकी झिलमिल झिलमिल होनेवाली चमचमाहटसे अनेक गुणी बढादी है फैन और बुदबुदोंकी शोभा जिसकी वैसा, **यः** = जो, **वाराम्** = जलका, **प्रवाहः** = प्रवाह है, (वह) **ते** = आपके, **शिरसिः** = शिरपै, **पृषतलघुदृष्टः** = जरासे जलकणके समान देखा गया, (फिर जब भगीरथ राजाकी प्रार्थनासे आपने जटा झाड दी और उस जल बिन्दुको नीचे छिडक दिया तब) **तेन** = उसी बूंदने घोधमार प्रचंड प्रवाह बन कर, **जगद्** = जगत (पृथिवी) को, **जलधिवलयम्** = समुद्ररूप गोलाकार वलयकरधनीसे चारों ओर घेर कर, **द्वीपाकारम्** = बेट समान, **कृतम्** = बना दीया, **अनेन** = इसीसे, **तव** = आपका, **वपुः** = शरीर (स्वरूप), **दिव्यम्** = अलौकिक, अत एव **धृतमहीम** = महिमा (विभुता) को धारण करनेवाला है, **इति** = इस प्रकार, **उन्नेयम्** =अनुमान करना चाहिये, भाव यह है कि आपका वैभव—आपके दिव्यादिक सभी कल्याणगुण अनंत हैं। १७ ॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥ १८ ॥

क्षोणी = पृथिवीको, **रथः** = रथ, **शतधृतिः** = ब्रह्माको, **यन्ता** = सारथी, **अगेन्द्रः** = सुमेरु (सुवर्ण) पर्वतको, **धनुः** = धनुष, **चन्द्रार्कौ** = चंद्रसूर्यको, **रथाङ्गे** = रथके पहिये, **अथो** = और, **रथचरणपाणिः** = चक्रपाणि विष्णु भगवानको, **शरः** = बाण (बना कर), **त्रिपुरतृणम्** = त्रिपुरासुर रूपी तृण को, **दिधक्षोः** = जलानेकी इच्छावाले, **ते** = आपको,

इति = इस प्रकार इतने भारी, **अयम्** = इस, **आडम्बरविधिः** = आडंबरको रचनेकी, **कः** = क्या आवश्यकता थी, कुछ भी नहीं। जिसने विश्वविजयी कामदेवको भी संकल्पमात्रसे जला डाला उसने शुष्कतृणरूप त्रिपुरासुरको जलानेकी इच्छा से उतना बडा बखेडा खडा क्यों किया ? योंही मोजमें आकर। **खलु** = असलियत तो यह है कि, **विधेयैः** = अपने हाथके खिलौनेसे, **क्रीडन्त्यः** = खेलती हुई, **प्रभुधियः** = प्रभावशालियोंकी बुद्धियाँ, **परतन्त्राः** = पराधीन, **न** = नही हुआ करती, सर्वथा स्वतन्त्र होती हैं, उनके उपर " ऐसा क्यों किया और वैसा क्यों नहीं किया " इस प्रकारका नियोजन नहीं हो सकता ॥ १८ ॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो—
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥ १९ ॥

शिवभक्तिकी महिमा ऐसी अनौखी है कि भक्ति करता है कोई एकाद ही, परन्तु फल मिलता है सारे संसारको। इसी रहस्यको भगवान् विष्णुके उदाहरणसे समझाते हैं।

हे **त्रिपुरहर** = हे त्रिपुरारे! **हरिः** = भगवान विष्णु, **ते** = आपके, **पदयोः** = चरणोमें, **साहस्रम्** = एक हजार, **कमलबलिम्** = कमल पुष्पोंकी भेटको, **आधाय** = चढानेका नियम लेकर पूजा करते रहते हैं (एक दिन), **तस्मिन्** = उन (कमलों) में से, **एकोने** = एक कम होजाने पर, **यद्** = जो, **निजम्** = अपने, **नेत्रकमलम्** = नेत्रकमलको, **उदहरत्** = (उन्होंने अपने ही हाथसे) उखाडा और नियमित संख्याको पूर्ण करनेके लिये आपके चरणोंमें चढाया। **असौ** = वही, **भक्त्युद्रेकः** = भक्तिका आवेग, **चक्रवपुषा** = सुदर्शन चक्ररूपसे, **परिणतिम्** = परिणामको, **गतः** = प्राप्त हो गया, अर्थात् सुदर्शन चक्र बन गया, और **त्रयाणाम्** = तीनों, **जगताम्** = लोकोंकी, **रक्षायै** = रक्षा करनेके लिये (आज भी), **जागर्ति** = सावधान है। तात्पर्य कि तीव्र भक्तिसे प्रसन्न होकर शिवजीने विष्णुजीको

सुदर्शन दिया जो सभी लोकोंकी, रक्षामें सदा तत्पर रहाता है। इस प्रकार भक्ति की एक (विष्णु) ने और सुदर्शनद्वारा रक्षारूप फल मिला सबको ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥ २० ॥

क्रतुमताम् = यज्ञयागादि कर्म करनेवाले सुकृतिजनोंके, **क्रतौ** = क्रियारूप यज्ञादिके, **सुप्तौ** = समाप्त होते ही निवृत्त हो जाने पर भी, **फलयोगे** = फल देनेके लिये, **त्वम्** = आप, **जाग्रत्** = जागते हुए सदा सावधान, **असि** = रहते हैं अर्थात् क्रियारूप होनेसे यज्ञादिकी समाप्तिके साथ ही निवृत्ति हो जाने के बाद भी यज्ञादिकोंके स्वर्गादिक फल आपके द्वारा ही अधिकारी जनोंको यथायोग्य अवसर पर बराबर मिलते रहते हैं। यदि कहा जाय कि यज्ञादि कर्मोंसे धर्म या पुण्यादिरूप अपूर्व (अदृष्ट) उत्पन्न होता है और उसीके अनुसार फल मिलता रहता है—इसमें शिवजीकी क्या जरूरत है? तो ऐसा कहना उचित नहीं; क्योंकि **कर्म** = (यज्ञादि) कर्म तो, **प्रध्वस्तम्** = नष्ट या निवृत्त हो गया और उससे उत्पन्न हुआ अदृष्ट जड है, सो **पुरुषाराधनम्** = चेतन पुरुष (शिव) की आराधनाके, **ऋते** = विना, **क्व** = कहीं, **फलति** = फल दे सकता है? नहीं दे सकता। **अतः** = इस कारण, **त्वाम्** = आपको, **क्रतुषु** = कर्मोंके, **फलदानप्रतिभुवम्** = फल देनेके लिये ठेकेदार, **संप्रेक्ष्य** = सोच समझकर ही, **जनः** = अधिकारी जन, **श्रुतौ** = वेद एवं वेदानुसारी शास्त्रमें, **श्रद्धाम्** = विश्वासको, **बध्वा** = दृढ बनाकर, **कर्मसु** = कर्मोंके करते रहनेमें, **दृढपरिकर** = दृढताके साथ कमर कसे तत्पर रहता है ॥ २० ॥

पूर्वोक्त श्रद्धासहितकी अपेक्षा श्रद्धारहित या अश्रद्धासे किये गये यज्ञादि कर्मोंका विपरीत फल बताते हैं—

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।

क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥ २१ ॥

हे **शरणद** = जिनका कहीं शरण (ठिकाना) नहीं, जिन्हें शरण (आश्रय) देनेके लिये कोई भी तैयार नहीं, उन भूत, प्रेत, सर्पादि अनधिकारीको भी अधिकारीसे भी अधिक शरण देनेवाले दयाभंडार भोलेभंडारी ! **क्रियादक्षः** = यज्ञादि क्रियामें निपुण, **तनुभृताम्**=देहधारी प्रजाका, **अधीशः** =पति, **दक्ष** = दक्ष प्रजापति, (उस समयका राष्ट्रपति स्वयं) **क्रतुपतिः**= यज्ञकरानेवाला यजमान था, **ऋषीणाम्** = त्रिकालदर्शी भृगु आदि ऋषि लोग, **आर्त्विज्यम्**=ऋत्विक आदिकी क्रिया करनेवाले थे, ओर **सुरगणाः** = ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि देवगण, **सदस्या** = माननीय मैंबर या खास आमंत्रित दर्शक थे । तथापि **क्रतुफलविधानव्यसनिनः**= यज्ञादिकर्मफल देनेके अठंग अभ्यासी, **त्वत्तः** = आप ही के द्वारा, **क्रतुभ्रंशः** = दक्षयज्ञका विनाश हुआ । क्यों ऐसा हुआ ? **ध्रुवम्** = अवश्य ऐसा तो नहीं होना चाहिये था ? हां **कर्तुः** = यज्ञकर्ताकी, **श्रद्धाविधुरम्** = श्रद्धाके विना, **मखाः** = किये गये यज्ञ, **अभिचाराय** = विपरीत फलदायक, **हि** = ही हुआ करते हैं । मतलब कि दक्षके पास यज्ञकी सफलताके सभी साधन विद्यमान थे, केवल एक शिवश्रद्धाका अभाव था । बस इतनेही से यज्ञ अपने साथ उसे (दक्षको) भी ले मरा ॥ २१ ॥

मर्यादालोपी कुमार्गगामी चाहे ब्रह्मा भी हो तो उसे भी उचित सजा शिवजीके शासनसे मिलती है इस बातका वर्णन करते हैं—

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ २२ ॥

हे **नाथ** = देव, दानव, मानव आदि सभीके नाकमें नाथ पहनाकर मर्यादामें रखनेवाले और सन्मार्गमें चलानेवाले हे पशुपते ! **अभिकम्** = कामुक (काम

१ क्रतुभ्रेशः—इति पाठान्तरम् ।

देवके आवेगमें आविष्ट), **प्रजानाथम्** = ब्रह्माजीने, **स्वाम्** = अपनी सगी, **दुहितरम्** = लकडीके साथ, **प्रसभम्** = बलपूर्वक, **रिरमयिषुम्** = रति (रमण) करनेकी इच्छा की,लडकी मारे संकोच और शर्मके, **रोहिद्भूताम्** = मृगी (हरिणी) बनकर भागने लगी तो ब्रह्माजी भी, **ऋष्यस्य** = मृगका, **वपुषा** = रूप (शरीर) धारके, **गतम्** = पीछे दौडे । उस निर्लज्ज ब्रह्माको नसिहत देकर अपनी नफटाईका होश करानेके लिये, **ते** = आपने, **अपि** = भी, **धनुष्पाणेः** = हाथमें धनुष्य उठाया, और **मृगव्याधरभसः** = मृगरूपधारी ब्रह्माको लक्ष्य करके कुशल शिकारीकी सिफतसे, **सपत्राकृतम्** = एक अमोघ बाण छोडा । डरी हुई मृगी मृगशिरा नक्षत्र होकर आकाशमें कूद गई, ब्रह्मा भी व्याधका तारा बनकर, **दिवम्** = आकाशमें, **यातम्** = पहुँचे । आपका बाण भी फोरन् आर्द्रा नक्षत्र बनकर ब्रह्माजीके पीछे एकदम लगोलग जा धमका और 'अब छिदा यह छिदा' इस तरह, **त्रसन्तम्** = भयभीत, **अमुम्**=उस ब्रह्माको, **अद्य** = आज (अभी तक), **अपि** = भी, **न**= नहीं, **त्यजति** = छोडता, बराबर पीछा कर रहा है । शिक्षा कैसी रही ? जैसा अपराध (पाप) था वैसी ही ॥ २२ ॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणव-
त्पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २३ ॥

हे **पुरमथन** = हे त्रिपुरदाहक ! **पुष्पायुधम्** = पुष्पधन्वा कामदेवने तो, **स्वलावण्याशंसा** = सर्वसौन्दर्यजननी जगदम्बा पार्वतीके सौन्दर्यरूप शस्त्रसे मैं महादेवजीको झटसे जीत लूंगा इस आशासे, **धृतधनुषम्** = धनुष्य उठाया था, परन्तु, हे **यमनिरत** = इंद्रियसंयममें नित्यनिरन्तर रत रहनेवाले हे योगीश्वर ! उसको, **पुरः** = अपने सामने, **तृणवत्** = तिनखेकी तरह, **अह्नाय** = तुरंत **प्लुष्टम्** = भस्मीभूत हुए, **दृष्ट्वा** = देखकर, **अपि** = भी, हे **वरद** = हे वरदान दाता ! **देहार्धघटनाद्** = पार्वती पर कृपा करके अर्ध-

नारीश्वररूपसे अपने देहके अर्ध (वाम) भागमें कायम घटा (बिठा) लेनेसे, **यदि** = यदि, **देवी** = पार्वती, **त्वाम्** = आपको, **स्त्रैणम्** = स्त्रीवशवर्ती, **अवैति** = समझती है, **अद्धा** = भले समझे, **बत** = क्योंकि, **युवतयः** = महिलायें, **मुग्धा** = प्रायः भोली भाली और समझहीन हुआ करती हैं। असलमें आप स्त्रैण नहीं, जीतकाम ही हैं ॥ २३ ॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा–
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥ २४ ॥

हे **स्मरहर** = हे कामान्तक ! **श्मशानेषु** = श्मशानोंमें, **आक्रीडा** = आनंदसे खेलना, **पिशाचाः** = भूतप्रेतादि, **सहचराः** = खेलनेवाले साथी, **चिताभस्म** = चितामें जले हुए मुरदोंकी राख, **आलेपः** = आखे शरीरमें लगानेका पावडर, **अपि** = और, **नृकरोटीपरिकरः** = मनुष्योंकी खोपडियोंसे बनाई हुई, **स्रग्** = गलेका हार (रुंढमाला), **एवम्** = इस प्रकार, **तव** = आपका, **अखिलम्** = आखा (सारा), **शीलम्** = अमंगल वस्तुओंके इस्तेमालका स्वभाव, **अमङ्गल्यम्** = अमंगल जनक, **नाम** = भले ही, **भवतु** = हो। **तथापि** = तो भी, हे **वरद** = हे वांछित वरदान-दाता ! **स्मर्तॄणाम्** = स्मरण करनेवालोंके वास्ते तो आप, **परमम्** = सबसे बढकर, **मङ्गलम्** = मंगलरूप ही, **असि** = हैं ॥ २४ ॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥ २५ ॥

यमिनः = यमनियमादि अष्टांग योगानुष्ठानमें लगे हुए योगीलोग, **सविधम्** = योगशास्त्रोंमें वर्णन की हुई विधिके अनुसार, **आत्तमरुतः** =

पूरक कुंभक रेचकरूप बाह्याभ्यंतर प्राणायामद्वारा प्राणवायु (श्वास प्रश्वास) का निरोध करके, **अपि** = और, **मनः** = मनको, **प्रत्यक्चित्ते** = अन्तरात्मामें, **अवधाय** = एकाग्र करके, **यत्** = जिस, **किम्** = कोइक (अनिर्वचनीय एकरस निर्विशेष सच्चिदानन्द परब्रह्मरूप), **तत्त्वम्** = तत्त्वका, **अन्तः** = अपने अंदर ही, **आलोक्य** = अवलोकन (अनुभव) करके, **प्रहृष्यद्रोमाणः** = रोमांचित हुए, और **प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः** = नेत्रोंसे आनन्दाश्रुके प्रवाहको उढेलते हुए, **इव** = मानो, **अमृतमये** = अमृतके, **ह्रदे** = सरोवरमें, **निमज्य** = निमग्न होकर, **आह्लादम्** = परमानंदको, **दधति** = प्राप्त होते हैं, **तत्** = वह निर्गुणनिराकार ब्रह्मतत्त्व, **खलु** = भी, **भवान्** = आप ही तो हैं । २५ ॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह–
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमितिच ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥ २६ ॥

त्वम् = आप, **अर्कः** = सूर्य, **असि** = हैं, **त्वम्** = आप, **सोमः** = चन्द्रमा हैं, **त्वम्** = आप, **पवनः** = वायु हैं, **त्वम्** = आप, **हुतवहः** = अग्नि हैं, **त्वम्** = आप, **आपः** = जल हैं, **त्वम्** = आप, **व्योम** = आकाश हैं , **त्वम्** = आप, **धरणिः** = पृथिवी हैं, **उ** = और, **त्वम्** = आप ही, **आत्मा** = आत्मा, **च** = भी हैं । **इति** = इस प्रकार आपकी अष्टमूर्तियोंका वर्णन शास्त्रोंमें पाया जाता है । **एवम्** = इन आठ ही मूर्तियोंके प्रतिपादनमें, **परिणताः** = दृढ आग्रह रखनेवाले विद्वान लोग, **त्वयि** = आपके प्रतिपादनमें, **परिच्छिन्नाम्** = परिच्छिन्न, (संकुचित) **गिरम्** = वाणीको, **बिभ्रतु** = भले बोलते रहे, **तु** = परंतु, **वयम्** = हम तो, **इह** = यहाँ, **तत्** = उस, **तत्त्वम्** = वस्तुको, **न** = नहीं, **विद्मः** = जानते, **यत्** = जो कि, **त्वम्** = आप, **न** = न, **भवसि** = हों । भाव यह है कि देश काल वस्तु सब कुछ आपका स्वरूपपात्र है, असीम अनन्त आपके स्वरूपमें किसी प्रकारकी परिच्छिन्नताका संभव नहीं ॥ २६ ॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा–
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥ २७॥

हे **शरणद** = शरणार्थिमात्रको बिना भेदभावके शरणमें ले लेनेवाले हे महाशरण्य **शिवजी !**, **ओम्** = ॐ, **इति** = यह, **पदम्** = पद, शब्द या नाम, **अकाराद्यैः** = अकारादि, (अकार, उकार, मकार इन), **त्रिभिः** = तीन, **वर्णैः** = अक्षरोंमें, **व्यस्तम्** = विभक्त हुआ (पदार्थ रूपसे), **त्रयीम्** =ऋक् यजुः साम इन तीनों वेदोंके रूपमें, **तिस्रः** = जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अथवा उत्पत्ति स्थिति लय इन तीनों, **वृत्तीः** = अवस्थाओंके रूपमें, **त्रिभुवनम्** = स्वर्ग भूमि पाताल इन तीनों लोकोंके रूपमें, **त्रीन्** = ब्रह्मा विष्णु, महेश, इन तीनों, **सुरान्** = देवोंके रूपमें, **अथो** = और स्थूल, सूक्ष्म, कारण ये तीन शरीर विश्व, तैजस, प्राज्ञ, ये तीन शरीराभिमानी विराट्, हिरण्यगर्भ, ईश्वर, ये तीन समष्टि-अभिमानी, अध्यात्म, अधिभूत, अधिदैव, इत्यादि सर्व त्रिपुटियोंके रूपमें, **अपि** = भी, **त्वाम्** = आपको ही, **अभिदधत्** = अवयवशक्तिद्वारा वाच्यार्थरूपसे कथन करता है, और **समस्तम्** = अखंड अविभक्त हुआ वही ॐ पदसमुदायवृत्तीसे, **तीर्णविकृति** = विकाररहित शुद्ध, **तुरीयम्** = सर्व त्रिपुटियोंसे पर, **ते** = आपके, **धाम** = स्वरूपका, **अणुभिः** = सूक्ष्म अर्धमात्रारूप, **ध्वनिभिः**= ध्वनियोंद्वारा, **अवरुन्धानम्** = लक्ष्य कराता हुआ, **गृणाति** = कथन करता है । अर्थात् स्थूल सूक्ष्म, कारण, महाकारण, आदि जो कुछ है वह सब ॐ काराभिन्न शिव ही है ॥ २७ ॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां–
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते ॥ २८ ॥

हे **देव** = दिव्यताके भंडार ! **भवः** = भव (जगतको पैदा करनेवाला), **शर्वः** = शर्व (भक्तोंको सुखी करनेवाला), **रुद्रः** = रुद्र (राक्षसोंको रुलानेवाला), **पशुपतिः** = पशुपति (पशु – अज्ञानी जीवोंके पाशोंको तोडनेवाला), **उग्रः** = उग्र (अज्ञानादि दोषोंको दग्ध करनेवाला तीक्ष्ण प्रचंड ज्ञानग्नि रूप), **सहमहान्** = ईश्वरोंके भी ईश्वर महेश्वर. **अथ** = अथवा देवोंके भी देव महादेव, **तथा भीमेशानौ** = भीम (पापियोंके लिये भयंकर) तथा ईशान (अपराधियोंके लिये समर्थ शासक), **इति** = इस प्रकारके (पावनोंके भी पावन), **यद्** = जो, **इदम्** = ये, **अभिधानाष्टकम्** = (आपके) आठ नाम हैं । **अमुष्मिन्** = इस (इन) मेंसे, **प्रत्येकम्** = प्रत्येक नामकी, **श्रुतिः** = वेद शास्त्र. **अपि** = (अपि शब्दसे ब्रह्मा विष्णु इन्द्र शेष शारदादि देवगण और नारदादि ऋषिलोग) भी, **प्रविचरति** = खूब विचार तथा पूर्ण श्रद्धा पूर्वक स्तुति करते रहते हैं । इस तरह वेदादि जिनके एक-एक नामकी स्तुतिमें संलग्न है उन, **प्रियाय** = परमप्रिय, **अस्मै** = इस, **धाम्ने** = परम तेजस्वी ज्योतिःस्वरूप, **भवते** = आप भगवान् शंकरको मैं भी, **प्रविहितनमस्यः** = मनसा वाचा कर्मणा साष्टांग नमस्कार करता, **अस्मि** = हूँ ॥ २८ ॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमतिसर्वाय च नमः ॥ २९ ॥

हे **प्रियदव** = हे एकान्तप्रिय ! **नेदिष्ठाय** = समीपसे-भी-समीप अन्तरात्मस्वरूप, **ते** = आपको, **नमः** = नमस्कार हो, **च** = और, **दविष्ठाय** = दूरात्सुदूर आपको, **नमः** = नमन हो । हे **स्मरहर** = हे कामान्तक ! **क्षोदिष्ठाय** = अणोरणीयान् आपको, **नमः** = नमन, **च** = और, **महिष्ठाय** = महतो महीयान् आपको, **नमः** = नमन, हे **त्रिनयन** = हे त्र्यम्बक ! **वर्षिष्ठाय** = वृद्धसे-भी-वृद्ध कालातीत आपको, **नमः** = नमन, **च** = और, **यविष्ठाय** = युवानसे-भी-युवान, सदा युवा आपको, **नमः** = नमन, एवं **सर्वस्मै** = सर्वरूप आपको, **नमः** = नमन, **च** = और, **तदिदमतिसर्वाय** =

वह यह परोक्ष प्रत्यक्ष आदि सर्व अवस्थाओंसे अतीत अनिर्वचनीय आपको, **नमः** = नमन हो नमन हो, लाखों नमन हो ॥ २९ ॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥ ३० ॥

विश्वोत्पत्तौ = विश्वकी उत्पत्तिके लिये, **बहलरजसे** = पूर्ण रजोगुणी बने हुए, **भवाय** = ब्रह्मारूप आपको, **नमोनमः** = वारंवार वंदन हो वन्दन हो, **जनसुखकृते** = तमामजीवोंको सुखी करनेके लिये, **सत्त्वोद्रिक्तौ** = सत्त्वगुणको बढा लेनेपर विश्वपालक, **मृडाय** = विष्णुस्वरूपधारी मृड (आप) को, **नमो नमः** = अनन्तवार नमस्कार । **तत्संहारे** = प्रलयका समय आने पर विश्वका संहार करने के लिये, **प्रबलतमसे** = प्रबल तमोगुणी, **हराय** = प्रचंडमूर्ति रुद्ररूपधारी आपको, **नमो नमः** = भूयोभूयो नमस्कार, **प्रमहसि** = अविद्याके लेशसे भी शून्य पूर्ण प्रकाशरूप, **पदे** = मोक्ष पदकी प्राप्तिके लिये, **निस्त्रैगुण्ये** = त्रिगुणातीत, **शिवाय** = प्रपञ्चोपशम शिवस्वरूप तुमको, **नमो-नमः** = लाखों प्रणाम ।

हे शिवजी ! विश्वकी उत्पत्ति, स्थिति एवं व्यवस्था (लय) इन अवस्थाओंके कारण रजोगुणी भव (ब्रह्मा), सत्त्वगुणी मृड (विष्णु), और तमोगुणी हर (रुद्र), ये सब नामरूप आपहीके होते हैं । वस्तुतस्तु, आपका स्वरूप इन सबसे रहित निस्त्रैगुण्ये ही है ॥ ३० ॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्वचेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा–
द्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥

हे **वरद** = हे वरदायक ! **क्लेशवश्यम्** = पञ्चक्लेशाधीन, **कृशपरिणति** = सामर्थ्यहीन पंगु, **इदम्** = यह मेरा, **चेतः** = चित्त, **क्व** = कहाँ किस योग्य है ? **च** = किसी योग्य नहीं, निरा अयोग्य है, **च** = और, **क्व** = कहाँ तो, **गुणसीमोल्लङ्घिनी** = तीनों गुणोंकी सीमा (पहुँच) से बाहर, **शश्वद्** = भूतभविष्यवर्तमान इन तीनों कालोंसे पर, **तव** = आपकी, **ऋद्धिः** = अनन्त असीम महिमा । **इति** = इस अपनी अयोग्यताके भानसे आपके संबंधमें एक शब्द भी कहनेके लिये मैं, **चकितम्** = भयभीत ही था, परन्तु **भक्तिः** = आपके चरणोंकी भक्तिने ही, **माम्**, = मुझे, **अमन्दीकृत्य** = उत्साह देकर योग्य बनाया और मेरे द्वारा, **ते** = आपके, **चरणयोः** = चरणोंमें, **वाक्यपुष्पोपहारम्** = महिम्नःस्तोत्रके वाक्य (श्लोक) रूप पुष्पोंकी भेट, **आधात्** = चढवायी । यह स्तोत्र आपकी भक्तिका ही प्रताप है ॥३१॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३२ ॥

हे **ईश** = हे महेश ! आपके दिव्य एवं कल्याण गुणोंको लेखबद्ध करनेके लिये, **सिन्धुपात्रे** = समुद्र तो दावात, **स्यात्** = बने, **असितगिरिसमम्** = काला पहाड, **कज्जलम्** = श्याही बने, **सुरतरुवरशाखा** = मोटे मोटे कल्पवृक्षकी शाखायें, **लेखनी** = कलम बने, और **उर्वी** = पृथिवी **पत्रम्** = पत्र (कागज) बने । **यदि** = इन सब असंभववित वस्तुओंको **गृहीत्वा** = संभवित बनाकर स्वयं, **शारदा** = सरस्वती देवी, **सर्वकालम्** = खाना, पीना, सोना, मरना आदि सब कुछ छोडकर सारा समय अजर अमर होकर, **लिखति** = लिखति रहे, **तद्** = तो, **अपि** = भी, **तव** = आपके, **गुणानाम्** = खास खास गुणोंके भी, **पारम्** = पारको, **न** = नहीं, **याति** = पा सकती । दूसरोंकी तो गुंजाइश ही क्या है ? ॥ ३२ ॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
ग्रंथितगुणमाहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।

सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥ ३३ ॥

असुरसुरमुनीन्द्रैः = असुरेन्द्र सुरेन्द्र तथा मुनीन्द्रो द्वारा, **अर्चितस्य** = पूजित, **इन्दुमौलेः** = चन्द्रमौलीश्वर, **ग्रथितगुणमहिम्नः** = गुणोंकी महिमासे युक्त, वास्तवमें तो **निर्गुणस्य** =निर्गुण, **ईश्वरस्य** = महादेवजीके **एतत्** = इस, **रुचिरम्** = मनोहारी, **स्तोत्रम्** = 'शिवमहिम्नः स्तोत्र' नामके स्तोत्रको, **सकलगणवरिष्ठ** = सर्वगन्धर्व गणोंमें श्रेष्ठ, **पुष्पदन्ताभिधानः** = 'पुष्पदन्त' नामक गन्धर्वराजने, **अलघुवृत्तैः** = बडे (शिखरिणी आदि) छन्दोंमें, **चकार** = बनाया। संभवतः 'शिव महिम्नः स्तोत्र' यहाँ समाप्त हो गया। आगेके श्लोक महात्यके मालूम होते हैं ॥ ३३ ॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेत-
त्पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुःपुत्रवान्कीर्तिमांश्च ॥ ३४ ॥

यः = जो, **पुमान्यः** = मनुष्य, **शुद्धचित्तः** = चित्तको पवित्र रखके, **परमभक्त्या** = परमभक्तिपूर्वक, **धूर्जटेः** = शिवजीके, **अनवद्यम्** = परम-पावन, **एतत्** = इस, **स्तोत्रम्** = स्तोत्रका, **अहः, अहः** = रोज-रोज, **पठति** = पाठ करेगा। **सः** = वह, **अत्र** = यहाँ इस लोकमें, **प्रचुरतर-धनायुः** = अति अधिक धन धान्य एवं आयुको पाकर, **पुत्रवान्** = पुत्रादि कुटुंबवाला, **च** = और, **कीर्तिमान्** = इज्जतवाला, **भवति** = होगा, **तथा** = तथा देहात्यागानन्तर, **रुद्रतुल्यः** = शिवसदृश होकर, **शिवलोके** = शिवलोकमें महिमाको प्राप्त होगा ॥ ३४ ॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं योगयागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नःस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ३५ ॥

दीक्षा = दीक्षा लेना, **दानम्** = दान देना, **तपः** = तप करना, **तीर्थम्** = तीर्थसेवन, और **योगयागादिकाः** = योग याग आदि सकल, **क्रियाः**= क्रियायें हे शंकर ! आपके, **महिम्नःस्तवपाठस्य** = महिम्नःस्तोत्रके पाठकी, **षोडशीम्** = सोलहवीं, **कलाम्** = कला के भी, **न अर्हन्ति** = योग्य नहीं हो सकती ॥ ३५ ॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥ ३६ ॥

पुण्यम् = पवित्र, **गन्धर्वभाषितम्** = पुष्पदन्तप्रणीत, **अनौपम्यम्** = अनुपम, **मनोहारि** = मनोहर, **शिवम्** = मंगलमय, **ईश्वरवर्णनम्** = शिवमहिमा वर्णनसे परिपूर्ण, **इदम्** = यह, **स्तोत्रम्** =स्तोत्र **आसमाप्तम्** = ३३ श्लोक तक समाप्त हो गया। अथवा समाप्ति तक पुण्यम्, अनौपम्यम्, मनोहारि, शिवम् और ईश्वरवर्णनम् है ॥ ३६ ॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥ ३७ ॥

महेशात् = महेश्वरसे बढकर, **अपरः** = ओर कोई, **देवः न** = देव नहीं **अस्ति** = है, **महिम्नः** = महिम्नः स्तोत्रसे बढकर, **अपरा** = अन्य कोई, **स्तुतिः** = स्तोत्र, **न**= नहीं है, **अघोरात्** = अघोर (प्रणव) मंत्रसे बढकर, **अपरः** = दूसरा कोई, **मन्त्रः** = मन्त्र, **न** = नहीं है, और **गुरोः** = गुरुसे, **परम्** = श्रेष्ठ, **तत्त्वम्** = कोई तत्त्व, **न** = नहीं है ॥ ३७ ॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषा-
त्स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥ ३८ ॥

शिशुशशधरमौलेः = जटामुकुटमें बाल (द्वितीया) चन्द्रको धारण करनेवाले, **देवदेवस्य** = देवाधिदेव महादेवजीका, **दासः** = भक्त, **कुसुमदशननामा** = पुष्पदन्त नामक, **गन्धर्वराजः** = एक था गंधर्वोंका राजा। **सः** = वह, **अस्य** = शिवजीके, **रोषात्** = कोपसे, **निजमहिम्नः** = अपनी महिमा (अदृश्य रहनेकी शक्ति, तिरोधान विद्या अर्थात् नजरबंधी) से, **भ्रष्टः** = च्युत हो गया, परन्तु उसने शिवजीको प्रसन्न करनेके लिये, **दिव्यदिव्यम्** = दिव्यातिदिव्य, **इदम्** = इस, **महिम्नः**=शिव महिमाके , **स्तवनम्**=स्तोत्रको **अकार्षीत्** = बनाया, **एव** = और भूतभावन भगवान शंकरकी कृपासे अपनी विद्याशक्तिको पुनः प्राप्तकर लिया, **खलु** = ऐसा सुना जाता है ॥ ३८ ॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥ ३९ ॥

सुरवरमुनिपूज्यम् = बडे, बडे देव और मुनिलोग जिसमें पूज्यभाव (श्रद्धा) रखते हैं, **स्वर्गमोक्षैकहेतुम्** = स्वर्ग एवं मोक्षका मुख्य कारण; **अमोघम्** = कभी निष्फल नहीं जानेवाला, **पुष्पदन्तप्रणीतम्** = पुष्पदन्त रचित, **इदम्** = इस, **स्तवनम्** = स्तोत्रका, **मनुष्यः** = कोई भी मनुष्य, **प्राञ्जलिः** = हाथ जोडकर, **अन्यचेताः** = शिवसे अन्यमें चित्त, **न** = न रखकर, **यदि** = यदि, **पठति** = पाठ करेगा तो प्रारब्धभोग पूरे होने पर, **किन्नरैः** = किन्नरों द्वारा, **स्तूयमानः** = मार्गमें सत्कार को पाता हुआ, **शिवसमीपम्** = शिवजीके पास, **व्रजति** = पहुँच जाता है । केवल पाठ करनेसे ही शिवसामीप्यकी प्राप्ति होती है तो फिर समझ बूझकर पाठ करनेपर तो शिवसारुप्य भी मिल ही जायगा ॥ ३९ ॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सहमोदते ॥ ४० ॥

यः = जो कोइ, **नरः** = मनुष्य इस स्तोत्रका, **त्रिकालम्** = तीनवार, **द्विकालम्** = दो बार, **वा** = अथवा, **एककालम्** = एकवार भी, **पठेत्** = पाठ करेगा तो वह, **शिवलोकम्** = शिवलोकको, **अवाप्नोति** = प्राप्त कर लेगा और, **शिवेन** = शिवजीके, **सह** = साथ, **मोदते** = मोज करेगा ॥ ४० ॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ४१ ॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन = श्री पुष्पदन्तके मुखकमलसे निकले हुए, **किल्बिषहरेण** = कायिक वाचिक मानसिक आदि सब प्रकारके पापोंको हर लेनेवाले, **हरप्रियेण** = भगवान् शंकरको सबसे अधिक प्रियलगनेवाले, **समाहितेन** = और समानभावसे सबका हित करनेवाले, **स्तोत्रेण** = इस स्तोत्रको, **कण्ठस्थितेन** = कंठस्थ करके, **पठितेन** = हरहंमेश पाठ करते रहनेसे, **भूतपतिः** = पञ्चभूतोंके या जडचेतनसमुदायरूप विश्वके पति-नाथ, **महेशः** = शंकर भगवान्, **सुप्रीणितः** = खूब खुश, **भवति** = हो जाते हैं और पाठकरनेवाले भक्तको ज्ञान देकर कृतार्थ कर देते हैं ॥ ४१ ॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥ ४२ ॥

इति = इस प्रकार, **एषा** = यह, (शिवमहिम्नःस्तोत्ररूप) **वाङ्मयी** = शब्दमयी, **पूजा** = भेट, श्रद्धाञ्जली **तेन** = उस (पुष्पदन्त) ने, **श्रीमच्छङ्करपादयोः** = श्रीशंकर भगवान् के चरणोमें, **अर्पिता** = समर्पित की और उसके समर्पण करते ही, **देवेशः** = देवदेव, **सदाशिवः** = नित्यमंगलमय महादेव जैसे उसके उपर प्रसन्न हो गये थे, वैसे ही, **मे** = मेरे उपर भी, **प्रीयताम्** = प्रसन्न हो जाय ।। ४२ ॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः॥ ॥ ४३ ॥

हे महेश्वर = हे महेश ? मैं, **तव** = आपके, **तत्त्वम्** = तात्त्विक (असली) स्वरूपको, **न** = नहीं, **जानामि** = जानता कि आप, **कीदृशः** = कैसे है; परन्तु हाँ, **महादेव** = हे महादेवजी ! इतना तो जरूर जानता हूं कि आप हैं और अवश्य हैं। खेर, **यादृशः** = जैसे भी, **असि** = आप हैं; **तादृशाय** = वैसे ही आपको; **नमोनमः** = मेरा वारंवार (नित्यम्प्रति) नमन (ॐ नमोनारायणाय) है ॥ ४३ ॥

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ४४ ॥

हे **देव** = दयालो ! पाठ करते समय प्रमादवश; **यद्** = जो कोई, **अक्षरम्** = अक्षर, **च** = और, **पदम्** = पद [शब्द], **भ्रष्टम्** = अशुद्ध उच्चारण, **भवेत्** = हो गया हो तथा, **यद्** = जो कोई, **मात्राहीनम्** = मात्राकी कमी रह गई हो अथवा कहीं काँवा छूट गया हो, **तत्** = तो, **सर्वम्** = उस सबको, **क्षम्यताम्** = अबोध बालक जानके क्षमा कीजिये और हे **परमेश्वर** = हे प्रभो ! **प्रसीद** = आप सदा प्रसन्न रहे। बस, आपकी प्रसन्नतामें ही मेरी प्रसन्नता है ॥ ४४ ॥

हरिः ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ ४५ ॥

॥ ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!! ॥

सर्वोऽपि ज्ञानमाप्नोतु सर्वो प्यज्ञानमन्ततु।
सर्वस्तरतु संसारं सर्वः सर्वत्र नन्दतु ॥ ४६ ॥



॥ आवश्यक निवेदन ॥

श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रके आरति आदिके अनुवादमें अन्वयक्रमसे संस्कृतपदोंके सामने हिन्दीमें उनके अर्थ दिये गये हैं। सुविधाके लिये संस्कृतपदों (शब्दों) के अक्षर कुछ मोटे रखे गये हैं। जिन जिज्ञासुओंको अकेले अर्थ जाननेकी इच्छा है, वे यदि संस्कृत शब्दोंको छोड कर केवल हिन्दी पढें (बांचें) गे तो भी श्लोकोंके भावार्थ उनकी समझमें सहजही आ जायँगे।

निवेदक

प्रवीणचन्द्र नाणावटी।

